कोविड, लड़कियों की आवाज़ में

लड़कियों द्वारा संचालित और लड़कियों को केंद्र बिंदु बना के की गयी एक पार्टिसिपेटरी रिसर्च स्टडी

EMpower

UK Government

डिस्क्लेमर: इस रिपोर्ट को UK गवर्नमेंट के फॉरेन, कामनवेल्थ, और डेवलपमेंट ऑफिस द्वारा प्रमाणित किया गया है। हालांकि, इस रिपोर्ट में व्यक्त किये गए विचार आवश्यक रूप से UK गवर्नमेंट की शासकीय पालिसी को नहीं दर्शाते हैं। इस रिपोर्ट में इस्तेमाल किये गए नक्शों को केवल प्रतिनिधित्व के अर्थ से दर्शाया गया है। नक्शों में रेखांकित भौगोलिक सीमाओं को UK गवर्नमेंट आवश्यक रूप से तस्दीक़ नहीं करती है।

कोविड, लड़कियों की आवाज़ में

लड़कियों द्वारा संचालित और लड़कियों को केंद्र बिंदु बना के की गयी एक पार्टिसिपेटरी रिसर्च स्टडी

एकनॉलेजमेंट्स

कोई भी बढ़िया और बारीक काम, बहुत सारे निपुण लोगों के योगदान के बिना नहीं हो सकता। ये रिपोर्ट भी यूं बनी। और इसे तैयार करने के लिए जो रिसर्च का काम हुआ, वो भी यूं हुआ। रिसर्च के लिए केवल नवम्बर २०२० से मार्च २०२१ के बीच का थोड़ा सा समय मिला था।इतनी जल्दी काम पूरा करना इस योगदान को और भी महत्वपूर्ण बनाता है।।

ये रिपोर्ट उन १५३ लड़कियों को समर्पित है जिन्होंने अपनी कहानियां और नज़रिया हमसे साझा किया। बल्कि लीडर लैब से आई उन 25 कमाल की रिसर्चकरता लड़कियों को भी है।। इनकी लगन, परख और जोश की वजह से, इस रिसर्च को रूप मिला, इस रिसर्च को आकार मिला और इसका विश्लेषण हो पाया। ये लड़कियां थीं : **रानी, प्रिया, खुर्शीदा, आवदा, नेत्रावती, ललिता, श्रेया, शाहजहां, नेहा, आलिया, गीता, प्रीती, अलविश, अंजुम, रोशनी, राधा, ज्योति, शुभांगी, सोनी, मोनिका, वंशिता, रिचा, पूजा, शिरीन** और **ज़ोहा**। उनके नेतृत्व, आपसी बहनचारे, और अपने साथ की लड़कियों की जिम्मेदारी लेना- ये सब हमारे लिए एक मिसाल बने।

हम फॉरेन कामनवेल्थ डेवलपमेंट ऑफिस का भी गहरा आभार मानते हैं , खासकर इन लोगों का : **ममता कोहली, जगन शाह, संजुक्ता रॉय** और **कथरीन सार्जेंट**, क्यूंकि उन्होंने इस काम की फंडिंग की। और शहरों में रहने वाली लड़कियों की असल ज़िंदगी को समझने के अपने दायित्व को, निष्ठा के साथ पूरा किया।

एम्पावर की ओर से, **जयंथी पुष्करन** (सीनियर प्रोग्राम अफसर) और **स्वर्णलता महिलकर** (गर्ल फेलो)ने मिलकर एम्पावर के लीडर लैब को एक ख़ास रूप देकर, उसे चलाया। उनकी बनायी रूप रेखा कुछ ऐसी थी और उन्होंने लैब को भी कुछ यूं चलाया, कि लड़कियों के अनुभवों को सीखने का माध्यम बनाया गया। लड़कियों को, रिसर्च के आधार पे जानकारी हासिल करने और निर्णय लेने में, बराबरी का पार्टनर बनाया गया। **ऐसातू बाह** (डायरेक्टर, किशोर लड़कियां और जेंडर को लेके पहल/Adolescent Girls and Gender Initiatives) ने प्रोग्राम को अपनी सलाह और दिशा दी। उन्होंने लीडर्स लैब को चलाने के लिए , एक बेहतरीन गर्ल फेलो/Girl Fellow को भी भर्ती किया। उन्होंने इन सारे कामों में योगदान किया- डेटा की जांच करना, और लड़कियों की समझ -परख को शामिल करते हुए, रिपोर्ट लिखना।

तन्वी मिश्रा (उच्च संचार विशेषज्ञ) ने **सारा साद** (संचार साथी) के साथ इस रिपोर्ट की रचनात्मक प्रस्तुति की। दोनों का ज़ोर रहा, कि इस रिपोर्ट का हिंदी, मराठी और अंग्रेज़ी में प्रकाशन हो। ताकि लड़कियां इस रिपोर्ट को पढ़ें। आखिरकार, यह रिपोर्ट उन्हीं के काम का नतीजा है।

प्राची गुप्ता (विकास रणनीतिज्ञ/ डेवलपमेंटल स्ट्रैटेजिस्ट) ने इस प्रोजेक्ट का प्रस्ताव रखा और FCDO के साथ संयोजन भी किया। **निशा धवन** (भारत की डायरेक्टर- कंट्री डायरेक्टर) ने इस प्रोजेक्ट की परिकल्पना की, और उसकी नीतियों, रिसर्च के डिज़ाइन, विश्लेषण करने के तरीके, डेटा की जांच, और रिपोर्ट लिखना - इन सब पहलूओं में उनका विशेष योगदान भी रहा। इन्होंने मिलकर प्रैक्टिशनर रिफ्लेक्शन - यानी कार्यकर्ताओं की गहन सोच और इनपुट प्रोसेस/ उनकी ये सोच रिपोर्ट तक कैसे पहुंचे- को भी डिज़ाइन किया।

एमपावर के स्टाफ के और भी लोगों का बहुत ज़रूरी और मूल्यवान योगदान रहा। इनमें शामिल हैं : **सिंथिया स्टील** (प्रेज़िडेंट और सी.ई.ओ.) जिन्होंने इस काम पे अपनी निपुण सोच लगाई और इसे निर्देशन दिया और इसकी समीक्षा भी की। **निकोल रजानी** (स्ट्रेटेजिक कम्युनिकेशन्स एन्ड मार्केटिंग लीड) ने इस रिपोर्ट को अपनी सम्पादकीय नज़र से परखा। **थेओडोरोस क्रोनोपॉलस** (सीनियर प्रोग्राम अफसर एंड सेफ़गार्डिंग लीड) ने इसके संरक्षण की व्यवस्था (यानी सेफ़गार्डिंग फ्रेमवर्क) को परखा और **ईवा रोका** (इवैल्यूएशन एंड लर्निंग कंसलटेंट) ने STATA के अपने कौशल को साझा किया।

हमसे ग्रांट/ अनुदान पाने वाले पार्टनर संस्थाओं ने एक ख़ास रोल निभाया। हर संस्था ने एक प्रतिनिधि का चुनाव किया, जिसने संस्था से जुड़ने वाले नए लोगों का परिचय दिया और ऐसी व्यवस्था की प्लैनिग की, जिससे मर्ज़ी और मंज़ूरी की जानकारी भी रहे और इन पे हर तरह का ध्यान दिया गया। और जिससे रिसर्च करने वाली लड़कियों को उनकी ट्रेनिंग, इंटरव्यू लेने और विश्लेषण के दौरान, सपोर्ट मिला।

हम इस क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ताओं और रिसर्च करने वालों भी धन्यवाद करना चाहते हैं । जो हमारे सहकर्मी और सहयोगी रहे । इन्होंने हमारे साथ अपनी सोच साझा की। लिखित तौर ,पे और एक राउंड टेबल के ज़रिये भी, जहां शुरुआती रिसर्च के नतीजे प्रस्तुत किये गए थे।

हम अपनी प्रकाशन टीम का भी आभार मानते हैं, जिनके बिना ये रिपोर्ट बन ही नहीं पाती। ग्राफ़िक डिज़ाइन और रेखाचित्रों के लिए, इनको हमारा धन्यवाद : **कोकिला भट्टाचार्य** ; हिंदी अनुवाद के लिए: **मंजू सिंह**, **नेहा मिश्रा**, **हंसा थपलियाल** ; मराठी अनुवाद के लिए : **रीनी फर्नेंडेज़** को हमारा धन्यवाद ।साथ ही, प्रूफ रीडिंग के क्षेत्र में ,अंग्रेजी के लिए, **कैरल परेरा**, हिंदी मैं **विभा दुबे** और मराठी में **रंजना फर्नांडेस** के आभारी हैं।

इस रिपोर्ट का उल्लेख यूं किया जा सकता है:
एम्पावर (2021)। **कोविड, लड़कियों की आवाज़ में *: लड़कियों द्वारा संचालित और लड़कियों को केंद्र बिंदु बना के* की गयी एक पार्टिसिपेटरी रिसर्च स्टडी**। दिल्ली :एम्पावर - द एमर्जिंग मार्केट्स फॉउंडेशन।

विषय सूची

भूमिका	02
काम करने का ख़ास तरीका/ कार्यप्रणाली	04
सोनी पे स्पॉटलाइट	10
रिसर्च करने वाले कौन हैं?	12
रिसर्च के प्रतिभागी कौन है?	14
गुणात्मक रिसर्च से जो पता चला	20
सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स के साथ मिलते-जुलते लक्ष्य	25
स्टेकहोल्डर मैपिंग	48
SDG 11 की निगाह से आगे देखना	63

भूमिका

अभी तक शहरों में रहने वाली लड़कियों पर कोविड-१९ के असली प्रभाव का पता नहीं चला है। पर हमें ये ज़रूर पता है कि इससे लड़कियों की ज़िंदगी पे गहरा प्रभाव पड़ा है, बहुत सारे बदलाव आये हैं। में रहने वाली लड़कियों परड़कियों को और हिंसा का सामना करना पड़ा है। उन्होंने स्कूल से अपने नाम हटाए हैं (कभी कभी तो पर्मनंट तौर पे), उनपे घर के काम का बोझा बढ़ गया है, और उनके लिए ढंग से रोज़गार कमाने के अवसर कम कर दिए गए हैं। कुछ समुदायों में, लड़कियों के लिए चिकित्सा की सेवायें पाना मुश्किल होता है , खासकर सेक्सुअल और प्रजनन सम्बन्धी चिकित्सा। कई लड़कियों के लिए, साफ़ सफाई और स्वस्थ रहने के सरल साधन, पहुँच के बाहर होते हैं। लड़कियां हमेशा से शहर की अदृश्य नागरिक रही हैं, लेकिन लॉकडाउन और कर्फ्यू ने उन्हें उन शहरों की पहुंच से से भी वंचित कर दिया है जहां वे रहती हैं।

इस संकट की घड़ी का सामना करते समय, हमारी ये कोशिश नहीं होनी चाहिए कि हम महामारी के पहले की दुनिया में वापस जाने की कोशिश करें। ये निर्णायक घड़ी है। कोविड -१९ अब एक साल से हमारे समाज को जकड़ा हुआ है। अगर आज हम पीछे मुड़के देखें, तो हम ये समझ सकेंगे कि हमारी कौन सी कोशिशें बिलकुल भी काम नहीं आईं हैं। फिर हम नए सिरे से, और लोगों को अपने साथ शामिल करके, असरदार काम कर पाएंगे।

एम्पावर संस्था में, हम मानते हैं कि लड़कियाँ खुद अपनी ज़िंदगी की एक्सपर्ट हैं। वो ही कार्यकर्ताओं और पॉलिसी बनाने वालों को इस मामले में सबसे बेहतर निर्देशन दे सकती हैं। ये एकदम ज़रूरी है, कि हम ध्यान देकर लड़कियों की बात सुनें, उनकी बात को अपने काम का आधार बनाएं, उन्हें निर्णय लेने का उत्तरदायित्व दें, और इस बात का ध्यान रखें कि उनपे किये गए सारे इन्वेस्टमेंट, उन तक पहुंचें। इस तरह, जब हम पावर उनके हाथों में देते हैं, जब निर्णय लेने और संसाधाओं को बांटने में उनकी पहल होती है, जब हम उनको स्पॉटलाइट में लाते हैं - तब हम अपना काम बेहतर तरीके से करते हैं। लड़कियाँ और उनके लिए कौन से मुद्दे सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं - ये दो बातें ही हमारे काम का आधार हैं। ये रिपोर्ट भारत के शहरों में रहने वाली लड़कियों की गहन सोच को शेयर करती है - कि इस दुनिया को और न्याय संगत कैसे बनाया जाए? इस तरह से ये रिपोर्ट हमें ये भी दिखाती है, कि लड़कियाँ किस तरह खुद अपने भविष्य का निर्माण कर सकती हैं।

इंग्लैंड के फॉरेन कामनवेल्थ एंड डेवलपमेंट ऑफिस (FCDO) के सहयोग से, हमनें एम्पावर लीडर्स लैब बनाया। एम्पावर ने तीन महीने की एक पार्टिसिपेटरी रिसर्च (जिस समुदाय में रिसर्च कर रहे हो, उनसे मिल के काम करना, उनको शामिल करना) लैब की संरचना की और उस आईडिया और आगे बढ़ाया। इस लैब में भारत के शहरी इलाकों से २५ लड़कियाँ शामिल हुईं। उन लड़कियों ने फिर अपने समुदायों की १५३ लड़कियों को इंटरव्यू किया और फिर, अपने रिसर्च से जो जानकारी मिली, उसका विश्लेषण किया। PAR- पार्टिसिपेटरी एक्शन रिसर्च प्रोजेक्ट - की संरचना और उसे कार्यरत करने की ज़िम्मेदारी, इन लड़कियों की ही थी। एम्पावर लीडर्स लैब ऐसी ख़ास जगह है, जहां ज्ञान पाने और सीखने सिखाने पे ज़ोर है। ये प्रोग्राम अलग अलग पहलुओं को साथ जोड़ के, भाग लेने वालों को शामिल करके चलता है। ऑनलाइन मास्टरक्लास भी होती हैं और ज़मीनी तौर पे, रिसर्च की ट्रेनिंग भी दी जाती है। ट्रेनिंग की कोशिश होती है कि लड़कियों में ये कुशलताएं बढ़ें- नेतृत्व कर पाने का हुनर, आलोचनात्मक समझ/विचार का विकास, और रिसर्च के ऐसे तरीके जो इस संकट के समय तो काम आएं ही, पर उससे आगे भी काम आ पाएं।

लड़कियों से हमने जो सबसे बड़ी बात सीखी, वो ये थी कि वो केवल अल्पकालीन सोच नहीं रखतीं - वो आगे देख के, अपने भविष्य पे फोकस कर रही हैं। इस संकट काल में, मदद पहुंचाना और संसाधनों और सर्विसस को उन तक पहुंचाने पे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। पर साथ साथ, लड़कियां एक बेहतर, न्याय संगत दुनिया में अपने भविष्य की कल्पना भी कर रही हैं जहाँ वो शहरों में सक्रिय नागरिकों के रूप में रह सकें।

उनका कहना है कि अब, जबकि अर्थव्यवस्था, समाज और स्कूल धीरे -धीरे खुलने लगे हैं, ये ज़रूरी है कि हम भी आगे नज़र डालें, व्यवस्था में बदलाव लाने की कोशिश करें।

इस रिपोर्ट के नतीजे विभिन्न पॉलिसी संरचनाओं से मेल खाते हैं। इनमें शामिल हैं, यूनाइटेड नेशंस सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स - SDGs - यानी यूनाइटेड नेशंस के विकास को लेके वो लक्ष्य, जो लम्बे समय तक मायने रखेंगे, और जिनके लिए लम्बे समय तक काम किया जा सकता है।

लड़कियों की सलाह को ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है, क्यूंकि ये सलाह उनके जीवन और तजुर्बों से उभरी है। पर इसलिए भी, क्यूंकि उनकी सलाह SDG के लक्ष्यों से मेल खाती है, जिससे हमें पता चलता है कि वो लक्ष्य वाकई ज़रूरी हैं। हमनें अपने डेटा और लड़कियों की सलाहों को पेश करने के लिए, SDG का ही इस्तेमाल किया है।

SDG3 को ख़ास महत्त्व देते हैं जो अच्छे स्वास्थ और सुख का ज़िक्र करता है ; SDG4: बढ़िया शिक्षा ; SDG8: योग्य काम और आर्थिक उन्नति ; और SDG11: ऐसे शहर और समुदाय, जो लम्बे समय तक बने रहें और संसाधनों का इस्तेमाल, संभाल के करें।

SDG 5: दोनों जेंडर को सामान अधिकार और SDG 10: लाभ या हक़ के मामले में समाज के अलग वर्गों में असमानताओं को कम करना - लड़कियों इन दो लक्ष्य पे सबसे ज़्यादा ज़ोर देती है। इनके आधार पे और सारे SDG पे काम किया जा सकता है। लड़कियों की सलाह पे, उनके साथ मिलके काम करने से ही हम गहरे, असरदार बदलाव ला पाएंगे। इसलिए, ऐसे बदलाव के लिए नए रस्ते खोलते हुए, हम SDG १७ पे ध्यान देते हैं, जिसका लक्ष्य है :पार्टनरशिप।
ये रिपोर्ट हमारी इस महत्वकांशा का एक रूप है: हम चाहते हैं कि हम लड़कियों की आवाज़ और उनके विवेक को दूर दूर तक पहुंचाएं। इसको करते हुए, हम ऐसे काम से जुड़े विस्तृत समुदाय/पारितंत्र को आमंत्रित करते हैं कि सब आएं, एक साकार तरह से जुड़ें, लड़कियों की बात ध्यान से सुनें और उनकी सलाह को केंद्रित करते हुए , काम करें।

मूल मार्गदर्शक

एम्पॉवर का मानना है कि इस तरह के रिसर्च के सही परिणाम के लिए, लड़कियों और जवान औरतों का इसमें शामिल होना ज़रूरी है। इस रिपोर्ट में किशोर लड़कियों को मुख्य रिसर्च टीम का भी हिस्सा बनाया गया और जवाब देने वाले समूह का भी। इस सहभागी रिसर्च को करते समय इन बातों पर ख़ास ध्यान दिया गया:

- लड़कियों की जिंदगी के बारे में सबसे बेहतर, लड़कियाँ ही जानती हैं।
- यह स्टडी लड़कियों के नेतृत्व में की गई है। इसलिए यह उनके जीवन की सच्चाई और उनका अपना खास नज़रिया दिखाती है।
- सभी प्रक्रियाओं और फैसले लेने वाली स्थितियों को इस तरह डिज़ाइन किया गया कि लीडर लड़कियाँ उनमें प्रभावपूर्ण तरीके से भाग ले सकें। रिसर्च के हर मोड़ पर उनके नज़रिये, उनकी समझ को पेश किया गया और ध्यान में भी रखा गया।

- यह रिसर्च लड़कियों और युवा औरतों के ऊपर नहीं किया गया, बल्कि उनके साथ किया गया है। पूरी प्रक्रिया के दौरानलीडर लड़कियों से ये सवाल पूछे गए:

- समुदाय के मामलों पर गौर करें।
- इंटरव्यू में एक ही सवाल को अलग-अलग तरीकों से पूँछा जाए, ताकि जवाब देने वाले और खुल के जवाब दे पायें और अपने अनुभवों पर अलग अलग तरीकों से और सोच पायें ।
- सीखने की इस प्रक्रिया मेंदोनों के रोल को ज़रूरी समझा जाए, यानि जवाब देने वालों काऔर अपना ।दोनों को एक दूसरे से जुड़ा हुआ समझा जाए ।

काम करने का ख़ास तरीका/ कार्यप्रणाली क्या - क्या किया गया और कैसे हुआ

पहला चरण — लीडर्स लैब का शुभारंभ

एम्पॉवरने जिन्हें ग्रांट दिया है, उनमें से 30 अहम् पार्टनर्स की राय ली। उन पार्टनर्स ने अपने समुदायों की जिन लड़कियों की सिफारिश की वे 13 से 24 साल के बीच की उम्र की थीं शहर में रहती थीं और नेतृत्व में अच्छी थीं। उनको पता था कि उनके समुदाय में किशोर लड़कियों के सामने कैसी-कैसी परेशानियाँ आती हैं !

लीडर लैब अहमदाबाद, अलवर, बरेली, दिल्ली, लखनऊ, मुंबई और पुणे के लिए पहले 25 लीडर्स को चुना गया।

दूसरा चरण — रिसर्च प्लान की डिज़ाइनिंग और निरीक्षण

रिसर्च में क्या सवाल पूँछे जाने चाहिए, इस पर सलाह देने के लिए एम्पॉवर स्टॉफ ने सात लीडर लड़कियों की मदद ली और उनकी राय को भी ध्यान में रखा। लड़कियों ने फॉर्म में कुछ बदलाव किए जैसे कि फॉर्म में डेमोग्राफिक (जनसँख्या को लेकर जानकारी) वाले भाग में, उन्होंने ये सवाल जोड़ा कि जवाब देने वाले की शादी हुई है या नहीं ?जिन सवालों के जवाब हाँ या ना में देने थे, उनके बगल में भीऔर लिख पाने की जगह बनाई गयी ताकि जवाब और खुलकर दिए जायें। तो आखिर में सवालों की लिस्ट कुछ इस तरह बनकर तैयार हुई- 48 हाँ और ना में जवाब देने वाले सवाल और तीनलंबे जवाबों वाले सवाल। उन तीनों के अंदर भी दो से चार छोटे सवाल।

एम्पॉवर ने लीडर लड़कियों की रिसर्च में तकनीकी और सॉफ्ट स्किल (सॉफ्ट स्किल:आप अपना काम कैसे करते हो, लोगों से किस अंदाज़ में बात करते हो, अपनी बात कैसे कहते हो, आदि) ट्रेनिंग के लिए **2 ऑनलाइन मास्टरक्लास** डिज़ाइन किया मास्टर क्लास का मूल उद्देश्य थाउनके इंटरव्यू लेने के तरीकों को और बेहतर करना और उन्हें सुरक्षा के बारे में बताना। कोविड - 19 का समय था, इसलिए सावधानियों का ज्ञान भी ज़रूरी था। यह भी सिखाना कि जिन का वे इंटरव्यू लेंगी उनको किस-किस आधार पर चुनना चाहिए । यहाँएक ज़रूरी बात यह भी रही कि इस पूरी प्रक्रिया से एम्पॉवर को उन लीडर लड़कियों से अपने बारे में फीडबैक मिला !

तीसरा चरण — फील्ड रिसर्च

लीडर लड़कियों में हर एक ने अपने समुदायों से 6 लड़कियों के इंटरव्यू लिए।इस दौरान एम्पॉवरने उनके लिए चेक-इन कॉल का इंतज़ाम कर रखा था, ताकि अगर किसी के पास कोई सवाल हो या फील्ड पर किसी तरह की दिक्कत आये, तो वे उसके बारे में बात कर सकें।

इसके अलावा, सभी लीडर लड़कियों ने एक फील्ड डायरी बनाई जिसमें उन्होंने कदम-कदम पर अपने विचार और अनुभव नोट किए।रिसर्च की खोज और परिणाम को बेहतर करने में इससे और मदद मिली। रिसर्च के आखिरी चरणों में लीडर लड़कियों ने इन नोट्स की सहायता से अपने नज़रिये, चुनौतियों अनुभवों और जो भी कुछ वे सीख पायीं थीं सब शेयर किया । इससे लड़कियों की जिंदगी के कई पहलू (खासकर महामारी से जुड़े हुए) सामने आएऔर उन्हें समझने में मदद मिली।

चौथा चरण — डेटा का विश्लेषण और नज़रिया

एम्पॉवर स्टाफ़ ने सभी लंबे जवाब वाले सवालों को इकट्ठा करने के लिए बॉटम-अप कोडिंग का सहारा लिया। हाँ-ना जवाब वाले सवालों को एम्पॉवरने एसटीएटीएके ज़रिये चेक किया। जनसँख्या संबंधित डेटा जैसे कि उम्र, जगह, जाति और धर्म को ध्यान में रखा गया। बाईवेरीएट विश्लेषण, सांख्यिकी/स्टेटिस्टिक और प्राथमिकता / फ़्रिक्वेन्सीकी बात करें तोसह-सम्बन्ध (कोरिलेशन), दो चर राशियों (वेरिएबल्स के बीच सम्बन्ध का माप होता है। यह बताता है कि दो डेटा प्वॉइंट आपस में कितने संबंधित हैंया दोनों में क्या जुड़ाव है! एक डेटा प्वॉइंट के बदलने पर दूसरे डेटा में कितना बदलाव आएगा? लड़कियों ने खुलकर यह ज़ाहिर किया कि डेटा की जाँच जाति और धर्म के लेंस से होनी चाहिए। यानिकिउन्होंने वह ढाँचाचुना जिसका बाईवेरीएट विश्लेषण किया गया। एम्पॉवर ने तब **एक मास्टर क्लास** का इंतज़ाम किया। इसमें शुरुआती चलन और परिणाम लीडर लड़कियों के साथ बाँटे गए। फिर उन्हीं लड़कियों ने तय किया कि फाइनल रिपोर्ट में क्या दिखाया जाए और क्या नहीं !

एम्पॉवर टीम ने विशेषज्ञों के एक ग्रुप को भी इस प्रक्रिया में शामिल किया। उन्होंने शुरुआती परिणामों पर अपनी राय और नज़रिया दिया । इस ग्रुप में चिकित्सक, फण्ड देने वाली एजेंसी , अकादमी के लोगों के साथ-साथ एम्पॉवरकी लड़कियाँ जो एम्पॉवर गर्ल्स एडवाइजरी कॉउंसिल (एन डी2) से थीं, ये सब शामिल थे। इस कॉउंसिल में 16 लड़कियाँथीं, जो एम्पॉवरको उनके प्रोग्राम और प्रक्रियाओं पर सलाह देती थीं। प्रक्रिया के अंत मेंएक वर्चुअल **राउंड टेबल** का आयोजन हुआ।यहाँ लीडर लड़कियों ने अपनी राय और परिणामों को इस काम से जुड़े अलग अलग क्षेत्र के लोगों के सामने रखा। ताकि वे भी अपना नज़रियादे सकें। फाइनल रिपोर्ट में यह सब शामिल किया गया।

"मुझे लगता है कि जनसँख्या को लेकर जानकारी/ डेमोग्राफिक प्रोफ़ाइल में शादीशुदा हैं या नहीं, का सवाल डालना काफी अच्छा कदम था क्योंकि इसका मतलब यह रहा कि विवाहित लड़कियों को इस प्रक्रिया में शामिल किया गया (या यूँकहें कि उनको इससे बाहर नहीं रखा गया)। यह ज़रूरी हैक्योंकि आमतौर परजिन लड़कियों की शादी हो चुकी होती है, वे एन जी ओ के प्रोग्राम का शायद ही हिस्सा बन पाती हैं। प्रोग्रामों का फोकस जब कम उम्र में शादी को रोकने पर होता हैया फिर अविवाहित लड़कियों से संबंधितऔर मामलों पर - शादीशुदा लड़कियों को अक्सर ऐसे प्रोग्राम से दूर रखा जाता है।"

-मंजिमा भट्टाचार्य
वरिष्ठ सलाहकार, अमेरिकी यहूदी विश्व सेवा

सीमाएँ

हालाँकि स्टडी के दौरान यह ध्यान रखा गया कि भाग लेने वालों और रिसर्च करने वालों के बीच बराबरी हो और दोनों एक दूसरे से खुलकर बात कर सकें और इस तरह हर स्टेप पर , विचार करने का मौक़ा मिले,खासकर डिज़ाइन, अमल, निरीक्षण और विचार के समय। फिर भी, इस काम की कुछ सीमाएँ रहीं :

- यह स्टडी रिसर्च करने वालों की सोच और नज़रिये पर निर्भर थी। यह स्टडी शोधकर्ताओं (रिसर्चर्स) की धारणाओं और विचारों पर निर्भर है, जो कि इस स्टडी की आवश्यक और एक ख़ास विशेषता हे। हालाँकि, ऐसा हो सकता है की फाइंडिंग्स में उनकी खुद की सोच का असर पड़ा हो।

- लीडर लड़कियों के लिए यह पहला मौका था जब वे रिसर्च कर रही थीं। एम्पॉवर लीडर्स लैब से उन्हें कुछ ही अनुभव मिले थे और उन्होंने रिसर्च के कुछ सीमित तरीके सीखे थे। इसलिए उनकी रिसर्च तकनीक उन्हीं सीखी हुई चीजों पर आधारित थी।

- यह अभ्यास कोविड 19 महामारी के समय किया गया था।आम तौर पर जिनका इंटरव्यू लिया जाता है, उनकी सुरक्षा का ख़्याल रखने के साथ-साथ रिसर्च पर भी पूरा ध्यान देनाआसान नहीं होता । तो ये तो महामारी के दिन थे! तो ये संतुलन बनाना और मुश्किल था!

- सीमांत इलाकों में रहने वाली लड़कियों को घर पर कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। उनको अकेले नहीं छोड़ा जाता है। वैसे तो रिसर्च टीम ने पूरी कोशिश की कि एक विश्वास का माहौल बने ताकि भाग लेने वाले खुलकर बात कर सकें। लेकिन कुछ भाग लेने वाली लड़कियाँ अपने परिवार वालों के सामने सवालों के जवाब देने से कतरा रही थीं। इससे उनके मन की बात निकलकर बाहर नहीं आयी।

रिसर्च करने वालों ने कुछ चुनौतियों का भी सामना किया-

- कहीं-कहीं पर वे पूरी जानकारी नोट नहीं कर पाए। इंटरव्यू के दौरान जवाब देने वाले जिस स्पीड में जवाब दे रहे थे, उनके लिए सब कुछ नोट करना मुश्किल था!

- उन्होंने यह भी देखा कि कुछ लोग उन सवालों के जवाब देने में सकुचा रहे थे जो सामाजिक दायरे के अंदर नहीं पूँछे जाते हैं।

संगठनात्मक प्रतिनिधि की भूमिका

एम्पावर की हर साथी संस्था ने अपनी संस्था से एक प्रतिनिधि को चुना :

- जो लड़कियों के समर्थन में हमेशा सबसे आगे रहा ।
- जिसने प्रक्रिया के सभी चरणों के दौरान सबकी सुरक्षा का ध्यान रखा।
- जिसने लड़कियों को अपना पूरा इंटरव्यू फॉर्म एम्पॉवर के साथ शेयर करने में मदद की।

"आजकल की युवा लड़कियों से जिंदगी के कुछ जरूरी सबक सीखे जा सकते हैं। जैसे कि किसी भी वर्तमान स्थिति को अपनाना, उसमें खुद को ढालना, बिना उम्मीद छोड़े! जो सबसे बड़ी बात मैंने उनसे सीखी है वो है- किसी भी हालात में हार न मानना चाहे जो भी स्थिति हो! इसके अलावा, इस पूरी प्रक्रिया ने मुझे लड़कियों के हित में और काम करने के लिए प्रेरित किया । ”

- वृंदा बजाज
लीडर लैब में संगठनात्मक प्रतिनिधि, स्वेच्छा

सुरक्षा का खास ध्यान

लीडर लैब ने डिज़ाइन के शुरू से आखिर तक सबसे ज्यादा महत्व सुरक्षा को दिया। एम्पॉवर ने:

- सलाहकारों, संगठनात्मक प्रतिनिधियों और लीडर लड़कियों के साथ मिलकर सुरक्षा के मुद्दों पर चर्चा की।
- रिस्क की संभावनाओं का एक रजिस्टर बनाया।
- लीडर लड़कियों को बताया कि वेइस काम के लिए रखे गए स्टॉफसे सुरक्षा संबंधी मुद्दे बाँट सकती हैं।
- लीडर लड़कियों को स्टाइपेंड (मेहनताना) भी दिया गया। साथ ही साथ कोविड 19 किट, सुरक्षा का सामान और सफर के लिए ऊपर से अलाउंस भी दिया।
- स्टडी के हर कदम पर लीडर लड़कियों और भाग लेने वालों को पूरा प्रोग्राम अच्छे से बताया गया और फिर उनकी सहमति मिलने पर ही आगे बढ़ा गया। अगर उनमें से कोई 18 साल से छोटी थीं, तोउनके माता-पिता / अभिभावक ने सहमति के पेपर पर साईन किया।

"मैंने जवाब देने वाली एक लड़की के पिता को समझाया कि इकट्ठा किया गया पूरा डेटा गोपनीय रहेगा। मैंने बताया कि इंटरव्यू उसी हिसाब से होगा जिसपर आप सबकी सहमति होगी। और अगर [आपकी बेटी] इंटरव्यू के दौरान कहीं भी किसी बात पर आपत्ति जताती हैतो मैं इंटरव्यू को वहीं रोक दूँगी ।"

—आवदा बी
दिल्ली लीडर्स लैब

रिसर्च करने वाले बनाम जवाब देने वाले

जबकि लीडर लैब में उन्हीं समुदायों की लड़कियों को शामिल किया गया जिन 153 लड़कियों का इंटरव्यू लिया जा रहा था, रिसर्च डिज़ाइन करने वालों ने रिसर्च डिज़ाइन में रिसर्च करने वालों को इंटरव्यू से बाहर रखा गया था। लीडर लड़कियाँरिसर्च करने वालों के रोल में ही रहीं और डेटा का विश्लेषण सही तरीके से कर पायीं। रिसर्चर अपने और प्रतिभागीयों के बीच फील्ड रिसर्च में होने वाले पावर के रिश्तों को बदलकर उनसे जुड़ाव बना सकी। गर्ल लीडर्स के अनुसार इस जुड़ाव को बना पाने के तीन कारण थे :

सहानुभूति

कइयों के लिए, अपने अनुभवों कोबाँटना एक मुश्किल जज़्बाती अनुभव था।उन्होंने बताया कि भाग लेने वाली लड़कियों ने उनसे खुलकर बात की, क्योंकि वे खुद भी उसी समुदाय से थीं।“उनके अनुभव मेरे और मेरे समुदाय की दूसरी लड़कियों जैसे ही थे उन्होंने मुझ पर भरोसा किया और बहुत कुछ शेयर किया। कुछ चीजें तो इंटरव्यू के सवालों से बाहर की भी थीं भले ही मैं उनसे पहली बार बात कर रही थी, पर मैंने सिर्फ एक रिसर्चर की तरह नहीं, बल्कि एक दोस्त की तरह उनकी बात सुनी। उन्हें भी लगा कि मैं उनमें से ही एक हूँ और इसलिए उनकी बातें अच्छी तरह समझ पाऊँगी” सोनी, (20, दिल्ली)

भरोसा जीतना

लीडर लड़कियों का मानना था कि वे भरोसा जीतने में कामयाब हुई थीं । “लड़कियों के लिए मासिक धर्म, आज़ादी की कमी और उन पर शादी करने का दबाव- जैसे मुद्दों पर बात करना मुश्किल था। मैंने उन्हें समझाया कि इन चीजों के बारे में बात करने से शर्माने या डरने की कोई जरूरत नहीं है। जब उनको लगा कि मैं खुद खुलकर इन मुद्दों पर बात कर रही हूँ, बिना किसी शर्म के, तब वे भी धीरे-धीरे खुल कर जवाब देने लगीं। प्रिया,(23, लखनऊ)।

बिना कोई राय कायम किये जवाब देने वालों को सुनना

अंजुम, (16, मुंबई) ने बताया कि "लड़कियों को बिना किसी रुकावट के अपनी कहानी कहने के लिए प्रोत्साहित करना फायदेमंद साबित हुआ। मैं चुप थी और [बातचीत] को भी नियंत्रित करने की कोशिश नहीं कर रही थी,भले ही कभी-कभी वे मुद्दों से हटकर भी कुछ कहने लग जाती थीं!इस तरीके से उनको खुलकर बात करने में मदद मिली। मैंने माता-पिता और दूसरे एडल्ट की तरह उनके बारे में कोई राय नहीं बनाई।बस उनको सुना। ”

एम्पॉवर लीडर्स लैब से मिली सीख और जानकारी

लीडर लड़कियों ने बताया कि उन्होंने नई सीख और जानकारी हासिल की। उन्होंने:

- अपने साथियों, उनके अनुभवों और वास्तविकताओं को समझने की एक प्रासंगिक समझ हासिल की।
- कोविड 19 ने लड़कियों और युवतियों पर क्या असर किया, इसकी बेहतर जानकारी हासिल की।
- रिसर्च करने, इंटरव्यू लेने, डेटा इकट्ठा करने और उनका विश्लेषण करने की अपनी क्षमता बढ़ाई।
- दूसरी लड़कियों के साथ काम करते हुए उनको सुनने के हुनर, सहानुभूति और सम्मान की भावना और निष्पक्षता पर भी काम किया।
- रिसर्च में पूरी सूचना के साथ सबकी सहमति और गोपनीयता का क्या महत्व है, उसको समझा और उसे सराहा।
- नए लोगों से बात करते समय अपने डर और संकोच को कम किया।

सोनी पे स्पॉटलाइट

जब सोनी से पूछा गया कि क्या वो एक लीडर है तो उसने कहा “मैं खुद को एक रिसर्चर समझती हूं ।”
“मैं लड़कियों से कुछ इस तरह सवाल करती हूँ, कि वो और कॉंफिडेंट फील करने लगती हैं । मुझपे भरोसा करके, वो मुझसे जल्दी खुल जाती है और अपने जीवन से जुड़ी, सारी सोच और छोटी छोटी बातें मुझे बता देती हैं। मैं नए लोगों से बात कर सकती हूं क्योंकि मुझे खुद पर भरोसा है। और मुझे यकीन है कि मैं आगे भी, लोगो से बात कर उनका इंटरव्यू कर सकती हूँ।"

“ पहले तो मुझे लोगों से बातचीत करने में बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा ”। कुछ लोग शंका की नज़र से देखते थे। वो चाहते ही नहीं थे कि मैं, जो कि एक अजनबी थी, उनकी लड़कियों से बात करूँ । लेकिन मैंने कोशिश नहीं छोड़ी और धीरज से काम लिया। मैं उन्हें समझाती रही कि मेरा काम कितना ज़रूरी है । आखिरकार उनके माता पिता को यकीन दिलाने में कामयाबी मिल ही गई।”

- सोनी
मुंबई ,उम्र २० साल

सोनी का आत्मविश्वास प्रभावशाली है। वो २५ लड़कियों के मजबूत दल का अंग है। जिसके तहत उसने अलग-अलग समुदाय की ६ लड़कियों से बातचीत की। उसका कहना है कि” मैं अलग-अलग समूह से मिलना चाहती हूं।” कोविड-१९ की महामारी के बाद जो बंद लगाया गया उसने लोगों की जिंदगी को तबाह कर दिया विशेषकर लड़कियों के जीवन पर इसका बहुत बुरा प्रभाव हुआ।”

जब वो एम्पावर लीडर लैब के साथ जुड़ी, तब उसकी मंशा नया हुनर सीखने और नए लोगों से मुलाकात करने की थी। शुरू में बहुत मुश्किलें आयी पर धीरे धीरे इंटरव्यू लेने की आदत पड़ गई। उसने इंटरव्यू लेने के अलग-अलग तरीकों को सीखा। अपने घर से दूर उन समुदायों को इंटरव्यू के लिए चुना, जो उसके लिए एकदम नए थे। “ पहले तो मुझे लोगों से बातचीत करने में बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा ”। कुछ लोग शंका की नज़र से देखते थे। वो चाहते ही नहीं थे कि मैं, जो कि एक अजनबी थी, उनकी लड़कियों से बात करूँ । लेकिन मैंने कोशिश नहीं छोड़ी और धीरज से काम लिया। मैं उन्हें समझाती रही कि मेरा काम कितना ज़रूरी है । आखिरकार उनके माता पिता को यकीन दिलाने में कामयाबी मिल ही गई।”

सोनी किसी भी मुसीबत से नहीं घबराती। उसका खुद का जीवन भी उन्हीं लड़कियों के जैसा है, जिनका उसने इंटरव्यू लिया है। वो उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव की रहने वाली है । गंभीर बीमारी की वजह से उसे मुंबई आना पड़ा । उसके माता-पिता तो काम के लिए पहले ही इस शहर में आ गए थे । अपनी बीमारी और पैसे की तंगी की वजह से ३ साल तक, उसे अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। वाचा चैरिटेबल ट्रस्ट, महिलाओं और लड़कियों के लिए काम करता है। इस ट्रस्ट के चलाये प्रोग्राम में भाग लेने के बाद, वो स्कूल में अपनी पढ़ाई फिर से जारी कर पाई है।

सोनी अब पूर्वस्नातक/ बैचलर्स डिग्री की पढ़ाई कर रही है और लीडर्स लैब में शामिल होने के बाद, एक लड़की की मदद भी कर रही है, जिसका उसने इंटरव्यू लिया है। “वो लड़की मानसिक रूप से बीमार है। उस पर कोई भी ध्यान नहीं देता, इसलिए मैं उससे हर रोज १ घंटे मिलती हूं। उसे पढ़ाती हूं, उससे बातचीत करती हूं। उसे बहुत अच्छा लगता है और मुझे भी।”

रिसर्च करने वाले कौन हैं?

एम्पावर लीडर्स लैब

पूजा दिनेश गोटल
19, मुंबई

मोनिका
19, नई दिल्ली

खुर्शीदा
20, लखनऊ

गीता दीपक चवान
21, पुणे

शाहजहां खातून सलाउद्दीन इदरीसी
18, मुंबई

आवदा
21, नई दिल्ली

ज्योति बाई
24, अलवर

नेहा विनायक कालभोर
18, पुणे

ललिता
16, नई दिल्ली

नेत्रावती निंगप्पा नदविनमणि
19, मुंबई

प्रीती सिंघ
24, नई दिल्ली

अंजुम परवीन मौहम्मद कमर शेख
16, मुंबई

शुभांगी रमेश जाधव
18, पुणे

प्रिया कैथवास
23, लखनऊ

रानी रावत
20, नई दिल्ली

सोनी कमलेश भारती
20, मुंबई

राधा
23, अलवर

शिरीन अंसारी
22, मुंबई

श्रेया रमेश राजबहूर
13, मुंबई

ज़ला वंशिता प्रकाशभाई
17, अहमदाबाद

रौशनी भारती
16, लखनऊ

आलिया वहीद भलदार
18, पुणे

अलविश
14, बरेली

ज़ोहा ज़ाकिर
18, मुंबई

रिचा
18, अहमदाबाद

रिसर्च के प्रतिभागी कौन हैं?

153 इस प्रोजेक्ट में, 7 शहरों के सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों से आने वाली लड़कियों और युवा महिलाओं के साथ इंटरव्यू किया गया। ये लड़कियां अपने लिंग, जाति, धर्म, और कई अन्य कारणो की वजह से पिछड़े समुदायों से आती हैं। ये शहर के अदृश्य नागरिक हैं।

उम्र

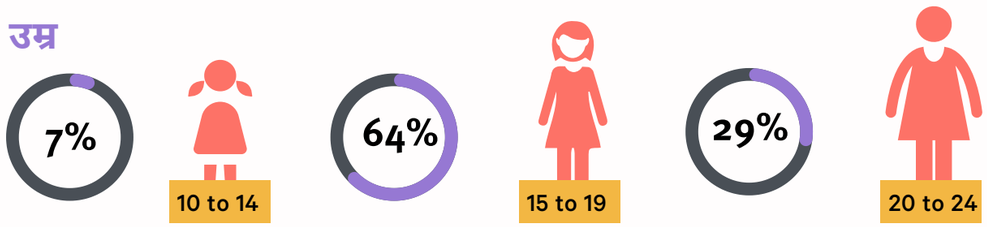

स्थान

शहर के अनुसार उत्तर देने वालों की संख्या

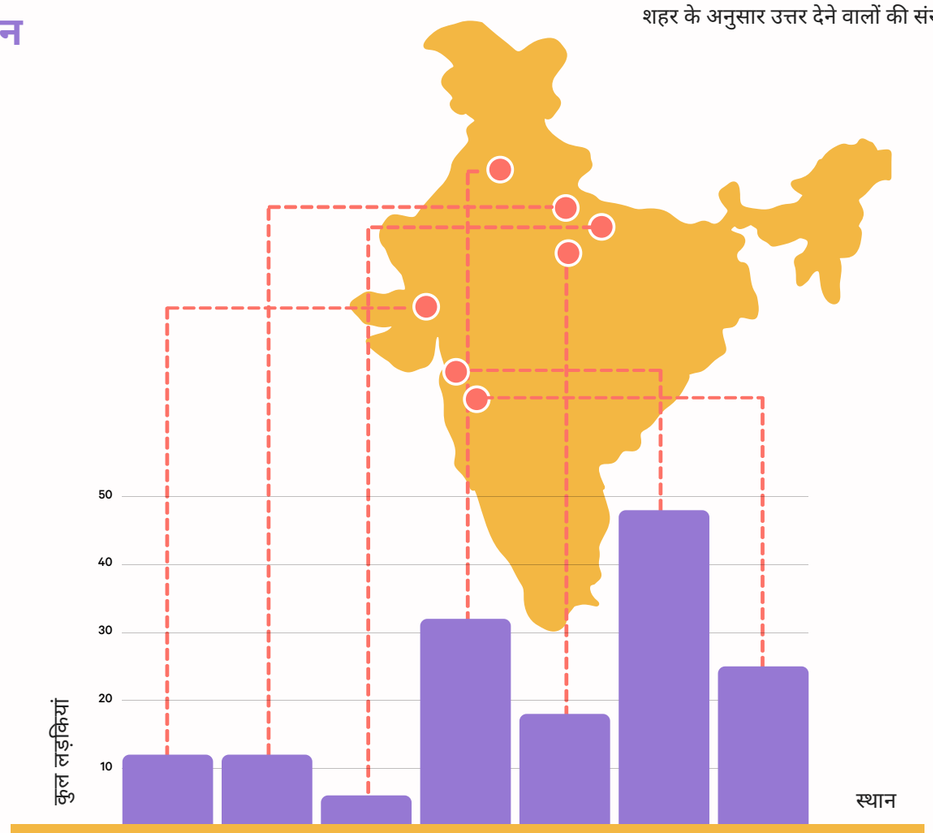

उम्र	अहमदाबाद	अलवर	बरेली	दिल्ली	लखनऊ	मुंबई	पुणे	
10-14	1	1	0	2	1	5	1	11
15-19	9	5	5	21	9	30	19	98
20-24	2	6	1	9	8	13	5	44
समस्त	12	12	6	32	18	48	25	153

100%

जवाब देने वालों की जेंडर पहचान महिला हैं।

96%

जवाब देने वालों को कोविड-19 की जानकारी थी।

3%

की पहचान विकलांग के रूप में हुई।

6%

जवाब देने वाले शादीशुदा थे।

10% जवाब देने वाले लॉक डाउन (बंद) के दौरान अपने गांव वापस चले गए।
लड़कियों ने अहमदाबाद अलवर मुंबई पुणे और लखनऊ से यात्रा की।
बरेली या दिल्ली से कोई भी लड़की बंद के दौरान शहर के बाहर नहीं गई।

धर्म

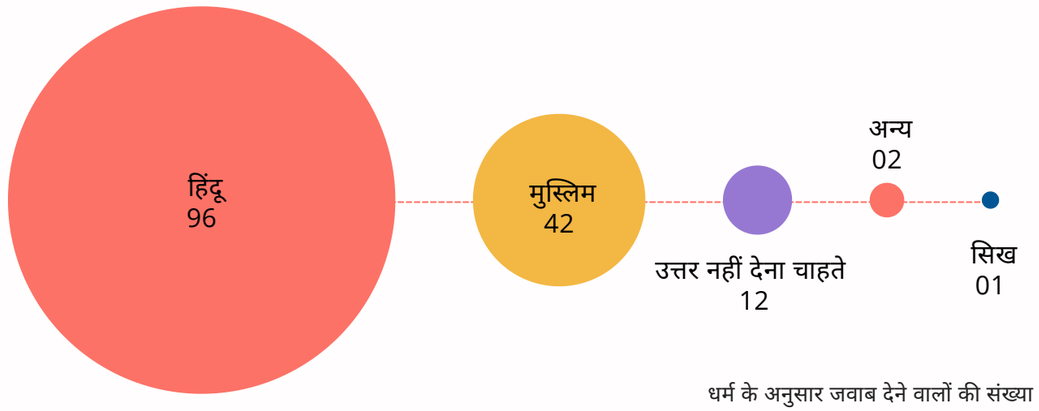

धर्म के अनुसार जवाब देने वालों की संख्या

जाति

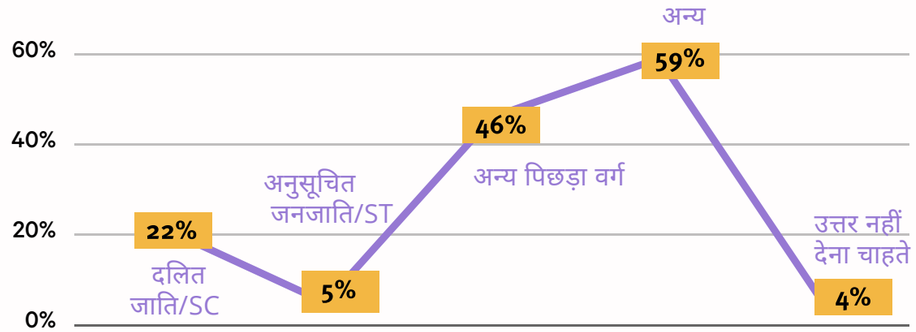

जाति के अनुसार जवाब देने वालों की संख्या

परिवार

1-4

48

5 - 8

78

9+

09

परिवार में सदस्यों की संख्या

लड़कियों की संख्या

बहन भाई की संख्या

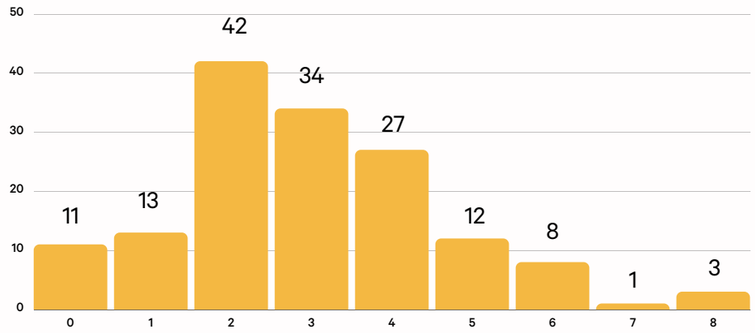

- जवाब देने वालों के घर में रहने वालों की औसतन संख्या 5.5 लोग थी।
- ज्यादातर लड़कियां चार अन्य परिवार के सदस्य के साथ रह रही थीं ।
- हमारे उत्तर दाताओं के औसतन 2.95 बहन- भाई थे और ज्यादातर के दो भाई बहन थे।
- 70 % उत्तर दाताओं के बहन- भाई उनसे छोटे थे जो परिवार में लड़के को प्राथमिकता देने का संकेत देता है।

शिक्षा का स्तर

शिक्षा के स्तर के अनुसार जवाब देने वालों की संख्या

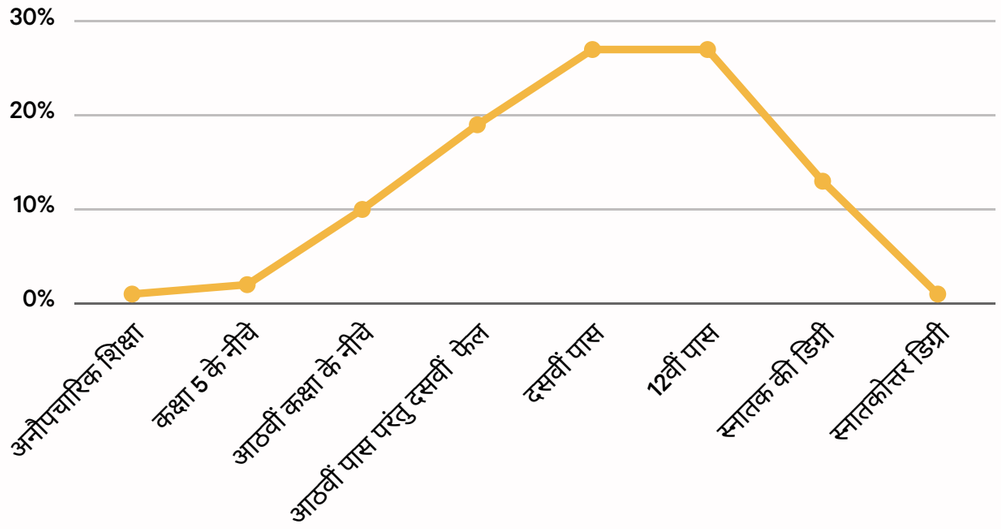

** कक्षा पांचवी, छठी, दसवीं और बारहवीं स्कूली शिक्षा के प्राथमिक और महत्वपूर्ण साल होते हैं।

कौन सी भाषाओं का इस्तेमाल होता है

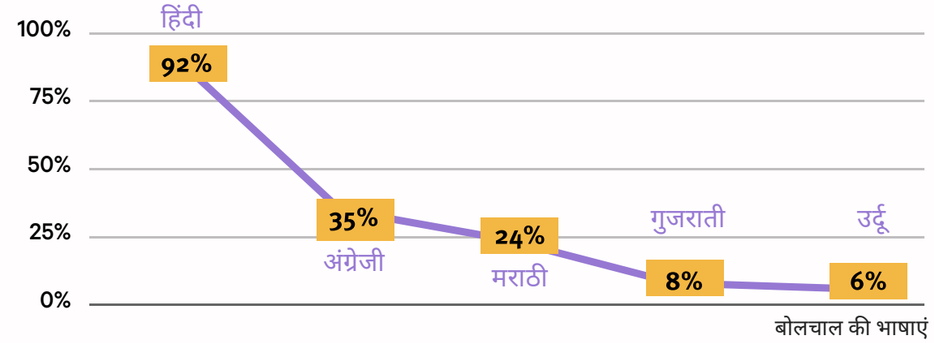

बोलचाल की भाषाएं

10-14 years

- 11 में से 4 लड़कियो पर घर के कामो की जिम्मेदारी हैं।
- सिर्फ 1 लड़की का मानना है कि किसी भी लड़की की जाति, वर्ग या विकलांगता उसे समाज में अलग करने में एक अहम् भूमिका निभाते हैं।
- इस ग्रुप की 9 लड़कियों में से जिनको माहवारी होती है, ज्यादातर सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करती हैं और इनमे से 1 कपडे का उपयोग करती है
- 11 में से 8 लड़कियों ने किसी तरह के मानसिक तनाव की सूचना दी
- 1 लड़की ने अपने आस-पास जेंडर आधारित हिंसा में वृद्धि की सूचना दी

15-19 years

- 97 में से 81 लड़कियो पर घर के कामो की जिम्मेदारी हैं।
- 22 लड़कियां मानती है कि किसी भी लड़की की जाति, वर्ग या विकलांगता उसे समाज में अलग करने में एक अहम् भूमिका निभाते हैं।
- इस ग्रुप की 94 लड़कियों में से जिनको माहवारी होती है, उनमे से 80 लड़कियां सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करती हैं, 13 कपडे का उपयोग करती है और1 मेन्सुरल कप का उपयोग करती हैं
- 88 लड़कियों ने किसी तरह के मानसिक तनाव की सूचना दी
- 26 लड़कियों ने अपने आस-पास जेंडर आधारित हिंसा में वृद्धि की सूचना दी

20-24 years

- 44 में से 37 लड़कियो पर घर के कामो की जिम्मेदारी हैं।
- 9 लड़कियां मानती है कि किसी भी लड़की की जाति, वर्ग या विकलांगता उसे समाज में अलग करने में एक अहम् भूमिका निभाते हैं।
- इस ग्रुप की 43 लड़कियों में से जिनको माहवारी होती है, उनमे से 38 लड़कियां सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करती हैं, 4 कपडे का उपयोग करती है और1 मेन्सुरल कप का उपयोग करती हैं
- 41 लड़कियों ने किसी तरह के मानसिक तनाव की सूचना दी
- 12 लड़कियों ने अपने आस पास जेंडर आधारित हिंसा में वृद्धि की सूचना दी

शहरों पर एक स्पॉटलाइट

अहमदाबाद

अहमदाबाद की कोई भी लड़की नहीं मानती:

- कि लॉकडाउन में लिंग आधारित हिंसा बढ़ी है।
- कि कुछ लड़कियों को दूसरों की तुलना में COVID का ज़ायदा प्रभाव पड़ा है।
- कि किसी भी लड़की की जाति, वर्ग या विकलांगता एक अहम भूमिका निभाता है उनके समाज से उन्हें अलग करने के लिए।
- सभी लड़कियों ने बताया कि उनके पास मास्क, सैनिटाइज़र और हैंड वाशिंग की सुविधा है।

बरेली

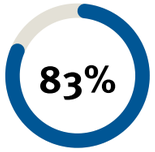

लड़कियां अपने करियर की संभावनाओं को लेकर आशान्वित थीं, एवरेज रिजल्ट से थोड़ा ज़ायदा (82%)

लॉकडाउन से पहले

6 में से 5 लड़कियों का स्कूल में दाखिला किया गया था - अब सिर्फ 2 लड़कियां स्कूल में हैं।

1/2

लड़कियों जो की बरेली से है उनका मानना है कि लिंग आधारित हिंसा बढ़ी है (6 में से 3)।

पुणे

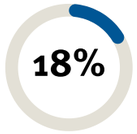

42% लोगों जिनका मानना है कि Covid के दौरान शादी करने का दबाव बढ़ा है, उनमे से 18% पुने से थे।

45% पुने में उत्तरदाताओं की सबसे अधिक संख्या थी जो अपने परिवारों के साथ शहर में चले गए थे।

44% इस अध्ययन में 7 शहरों में से, पुने की लड़कियों को अपने करियर की संभावनाओं (44%) के बारे में सबसे कम उम्मीद थी।

लखनऊ

लड़कियां, जो मानती हैं कि लॉकडाउन के दौरान लिंग आधारित हिंसा में वृद्धि हुई है, वो लखनऊ से हैं।

17/18

लड़कियों ने कहा कि घरेलू काम उनकी ज़िम्मेदारी है और उनमें से किसी को भी पुरुष रिश्तेदारों से कोई मदद नहीं मिलती है।

लॉकडाउन से पहले

लड़कियां स्कूल में नहीं थी।

अलवर

26% लड़किया जिनका मानना है कि लॉकडाउन के दौरान लिंग आधारित हिंसा में बढ़ावा हुआ है, उनमे से 41% अलवर से हैं।

5/6

लड़कियों ने किसी तरह के मानसिक तनाव की सूचना दी

सभी

लड़कियों ने शादी करने के लिए दबाव बढ़ने के बारे में भी बताया।

दिल्ली

लड़कियां इस समय स्कूल में हैं।

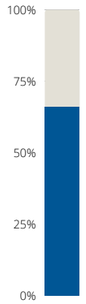

27 लड़कियों में से जो ऑनलाइन 18 (66%) सीख रही हैं, उन्हें यह मुश्किल लगता है।

None

दिल्ली की किसी भी लड़की ने लॉकडाउन के दौरान शहर नहीं छोड़ा।

मुंबई

जिन 42% लोगों का मानना है कि शादी करने का दबाव COVID के दौरान बढ़ा है, उनमे से 30% मुंबई से थे।

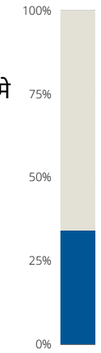

जिन 29% लोगों को लगता है कि लड़कियों की जाति, वर्ग, या विकलांगता की अहम भूमिका निभाता है उनके समाज से उन्हें अलग करने के लिए, उनमे से 34% मुंबई से हैं।

मेट्रो सिटीज

30% लड़कियां जो स्कूल में नहीं हैं, उनमे से 55% मेट्रो शहरों से हैं।

उत्तरदाता भारत के मेट्रो शहरों से हैं।

जिन लड़कियों के पास सीखने के लिए आवश्यक उपकरण हैं उनमें से आधी से ज़ायदा मेट्रो शहरों की हैं

मेट्रो शहरों की लड़कियां गैर-मेट्रो शहरों की लड़कियों की तुलना में अपने करियर की संभावनाओं के बारे में कम आशान्वित हैं (मुंबई उत्तरदाताओं 68%, दिल्ली 71%, एवरेज रिजल्ट: 82%)

शहर में प्रवास

सभी उत्तरदाताओं में से जो 68% शहर में पैदा हुए थे वो वर्तमान में वहीँ रहते हैं, और 32% अपने परिवारों के साथ शहर चले गए थे।

जो लड़कियां शहर चली गयी थी :

- मुंबई से जितने भी 35% उत्तरदाताओं थे वो सभी मुंबई दूसरे शहर से आये हुए थे
- शहर में माइग्रेट करने वाली 37% लड़कियां अनुसूची जाति / अनुसूची जनजाति / ओबीसी थी
- सभी माइग्रेंट लोगो में से 25% मुस्लिम थे, और 56% हिंदू थे
- उत्तरदाताओं की सबसे ज़ायदा संख्या पुने से,थी (45%) जो दूसरे शहर से मुंबई में आये थे।

गुणात्मक रिसर्च से जो पता चला

लीडर्स लैब की कोशिश रही है कि लड़कियों की आवाज़ और उनके नज़रिये के अलग अलग पहलुओं को रिकॉर्ड में रखा जाए।इसलिए उन्होंने ऐसे सवाल पूछे जिनका जवाब सिर्फ 'हाँ' या 'ना' में नहीं था, ताकि जवाब देने वाली लड़कियाँ महामारी के अपने पूरे तज़ुर्बे पर सम्पूर्ण रूप से गौर कर सकें। अक्सर 'हाँ' या 'ना' वाले सवालों में ऐसा नहीं हो पाता है। हमने ये सवाल पूछे:

१)आपकी ज़िंदगी महामारी के पहले कैसी थी और महामारी के बाद कैसे बदल गयी ? इसमें आपको कौन से बदलाव पॉज़िटिव लगते हैं और कौन से निगेटिव ?

२) इस बीते समय की कौन सी चीज़ें आप रखना चाहती हैं और कौन सी ख़त्म करना या बदलना चाहती हैं ?

उनके जवाबों का विश्लेषण करने के लिए एक प्रवचन विश्लेषण आयोजित किया गया था (और बार- बार ज़िक्र में आने वाले) विषयों को नाम दिया गया,यानि एक लेबल दिया गया।सर्वे करने से पहले भी एम्पॉवर को लगा कि कुछ ऐसी थीम्स/ बातें थीं जिनका ज़िक्र जवाबों में ज़रूर आएगा - तो डेटा को उनके ज़रिये भी परखा गया।आगमनात्मक दृष्टिकोण के लिए भी जगह बनायी गयी। इसके ग्राफ्स और शब्दों के बादल के आधार पर नए कोड्ज़/ लेबल बनाये गए। इन कोड्सको फिर परिमाणित किया गया ताकि डेटा के प्रवाहों को समझा जा सके।
नीचे दिए गए अनुपात से आपको पता चलेगा कि प्रश्नों के जवाब देने वालों में से कितनों ने अपने जवाबों में हमारे विषयों/ थीम्स का ज़िक्र किया है।

कार्यकर्ता का नज़रिया

"यह तो स्पष्ट है कि कोविड -19 महामारी और उसके चलते जो लॉकडाउन हुआ, उनसेपितृसत्ता और जाति के आधार पर उत्पीड़न करने वाले समाज नेभेद भाव को और बढ़ा दिया।जो असमानताएँऔर बेइंसाफ़ियाँथीं, वे बढ़ गयीं। हाँ, हमारे निष्कर्ष ऐसे नहीं होने चाहिए कि अब हम कोविड के पहले के वक्त को बहुत ही बढ़िया समझने लगें.. या कोविड को सारे निष्कर्षों का आधार समझने लगें !देखा जाए तो, हमारे सवालों के जवाब देने वालों में केवल 21% ने कहा कि कोविड के पहले उनको विस्तृत संसाधन मिल रहे थे ... तो फिर तो यह स्पष्ट है कि लड़कियों के लिए पहले से ही हालात बहुत ख़राब थे और महामारी के दौरान ये हालात बद से बदतर हो गए!"

डॉ . रामातु बांगुरा
एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, चिल्ड्रेन्स राइट्स इनोवेशन फण्ड - यानि बच्चों के अधिकारों और नवरचना फण्ड।

पहले लड़कियाँ''वही पुरानी दिक्कतों' का सामना कर रही थीं, पर कोविडने कुछ 'नई दिक्कतें " खड़ी कर दींजिनकी लड़कियों को भनक भी नहीं थी ... मुझे नहीं पता कि क्या बीते दिन (सच में) बेहतर थे ? ऐसा तो नहीं कि हमें उन तकलीफों और मुद्दों की इतनी आदत हो गयी थी कि हम उनपर ध्यान ही नहीं देते थे ?"

सीमा दोसाद
उम्र 20, एम्पॉवर लड़कियों की एडवाइजरी काउन्सिल की सदस्य

मेरी ज़िंदगी पहले कैसी थी के मुकाबले में . मेरी ज़िंदगी अब कैसी है ?

कोविड 19 से पहले

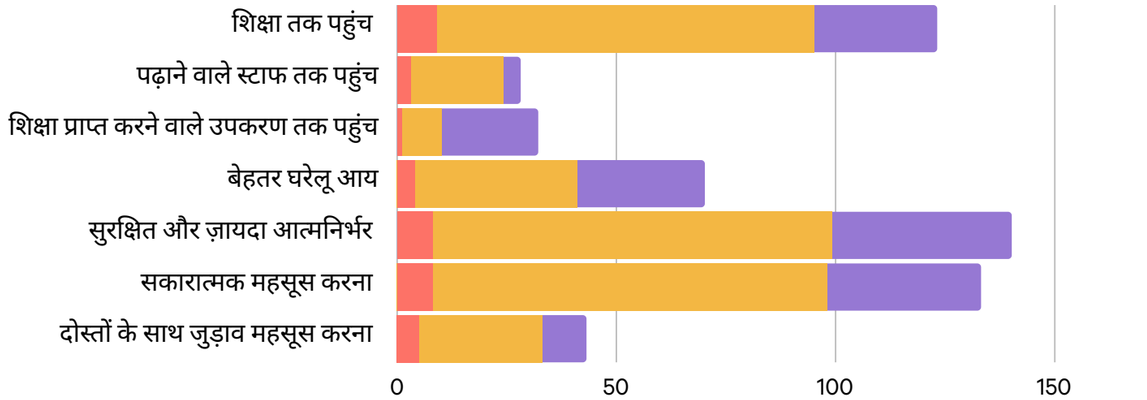

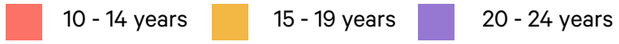

कोविड के कारण चुनौतियां

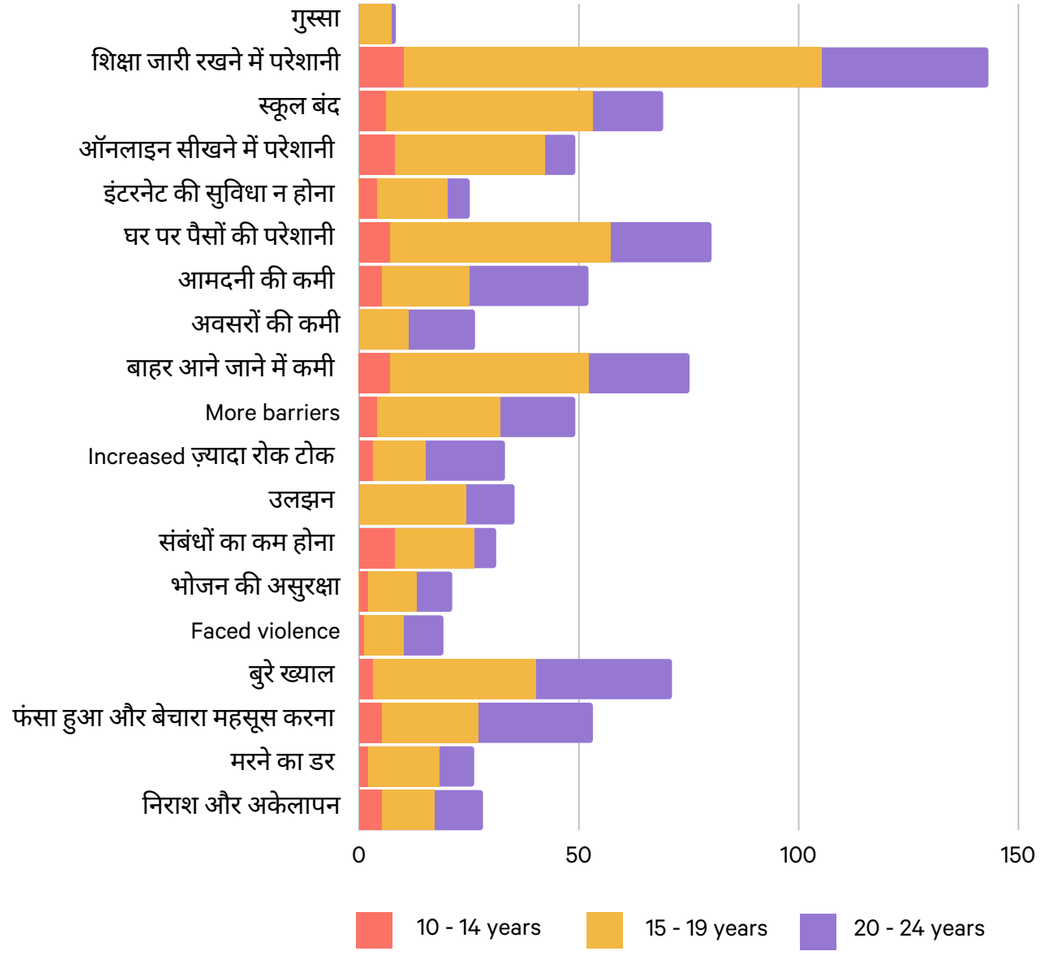

सकारात्मक प्रभाव

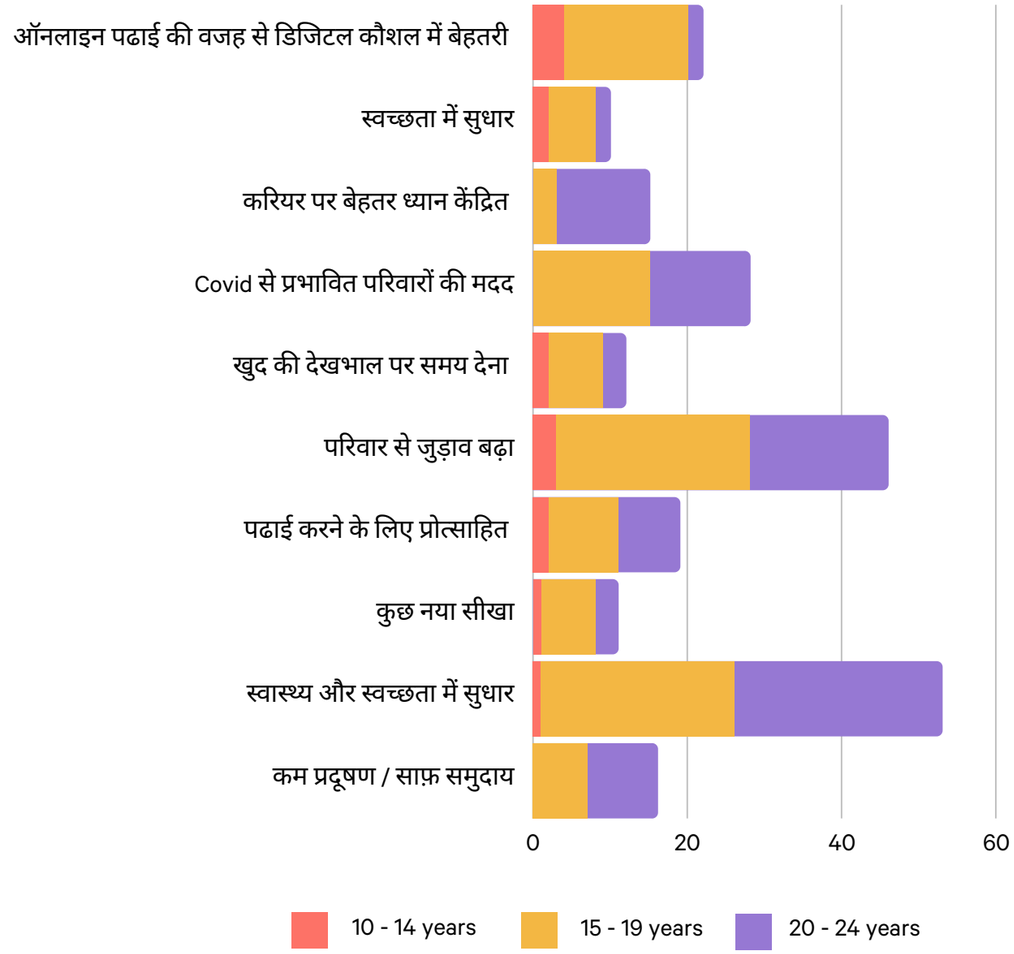

हम पिछले 12 महीनों से क्या रखना चाहते हैं

- 32 लड़कियां ऑनलाइन और अपने फोन के माध्यम से पढाई करना जारी रखना चाहती हैं ताकि वे घर से शिक्षा जारी रख सकें।
- 14 लड़कियां ऑनलाइन सीखने के आत्मविश्वास को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों पर अपने प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) को जारी रखना चाहती हैं।
- 3 लड़कियां चाहती हैं कि सरकार शादी होनेपर कम मेहमानों को बुलाने की यह नयी आदत बनी रहे, इससे परिवारों का आर्थिक बोझ बहुत कम होगा।
- 15 लड़कियां अपने उन दोस्तों को साथ रखना चाहती हैं, जो मुश्किल समय में उनकी लिए खड़े थे।
- 2 लड़कियां अपने परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ीं और उनके द्वारा समर्थित महसूस किया।
- 13 लड़कियों ने गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के समर्थन और मार्गदर्शन के बारे में बताया जो कोविड 19 जैसी स्थिति में भी उनका साथ देते रहे, जैसे उन्हें मास्क, सेनिटाइज़र , और हाथ धोने के साधन देना।
- 10 लड़कियों को जारी रखना था, खुश मिजाज़, पॉजिटिव रहना और आशा रखना, ताकि वे कोविड 19 जैसी हालत का सामना कर पाए ।
- 12 लड़कियों ने अपनी साफ़, प्रदूषण रहित, बीमारी रहित माहौल, का आनंद लिया क्योंकि अ ट्रैफिक था ही नहीं, लोग घर पर जो रह रहे थे !

कार्यकर्ता की सोच

" ये बढ़िया है कि लोगों को अपने परिवारों के साथ समय बिताने का मौक़ा मिल रहा है। पर अब भी एक बड़ी तादाद में ऐसी लड़कियाँ और औरतें हैं जो अपने ही घर की चार दीवारों में अपने को सुरक्षित नहीं पाती हैं "
काजल सिंह, उम्र 22 , एम्पॉवर की सलाहकार काउन्सिल की सदस्य।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स के साथ मिलते-जुलते लक्ष्य.

*एस डी जी (यानि जो विकास टिक सकें, उनके लक्ष्य क्या होंगे ?)

अगले कुछ पन्नों में, इस काम से हमें जो पता चला है , हमने उसे एस डी जी, के हिसाब सेअलग -अलग विषयों में बाँटाहै। हर भाग में हम अपनी जानकारी के तीन स्त्रोत का उल्लेख करते हैं : हमारे सवालों के जवाब देने वाले लोग, गर्ल लीडर्सऔर कार्यकर्ता (अकादमिक/ उच्च शिक्षा में काम करने वाले, रिसर्चरऔर किशोर लड़कियों के साथ काम करने वाले उनके हमउम्र, साथ- साथ हमारी सलाह देने वाली काउन्सिल,यानिगर्ल्स एडवाइजरी काउन्सिल की लड़कियाँ भी)।

1)इन **153** जवाब देने वालों के डेटा से हम इन सबको भी शामिल करते हैं :

हाँ/ना के जवाब वाले सवालों से मिला डेटा जिसका नाम है

फील्ड से मिला डेटा

डेटा सेट को और रंगीन करने के लिए जवाब देने वाली लड़कियों के जवाबों के अंश। इसका नाम है (यानिकाम के क्षेत्र से लड़कियों की आवाज़ें।

वॉइसेस फ्रॉम द फील्ड

महामारी के बाद प्लानिंग कैसी होनी चाहिए, इसपर लड़कियों की सलाह, जिसका नाम है

एडवाइस फ्रॉम द फील्ड

1.लीडर लड़कियों से हमने यह भी शामिल किया है :

उनकी फील्ड डायरी से उनके विचार और उनकी सोच और उनका डेटा विश्लेषण मास्टर क्लास से भी। इसका नाम है

रिफ्लेक्शंस फ्रॉम द लीडर्स लैब

2. कार्यकर्ताओं से हमने यह शामिल किया :

किशोर लड़कियों के साथ काम करने पर उनके डेटा और तजुर्बे पर उनकी सोच। इसका नाम है:

रिफ्लेक्शंस फ्रॉम प्रैक्टिशनर्स

एस डी जी 5

जेंडर को लेकर समान अधिकार और भेद भाव नहीं

एस डी जी 10

सामाजिक, आर्थिक असमानताएँ कम करना

कोविड - 19 असमानताओं को और बढ़ाया है, खासकर किशोर लड़कियों और जवान औरतों में।इससे पितृसत्ता समाज का भार बढ़ गया है और जेंडर के आधार पर भेद भाव भी। लॉकडाउन से बिना तनख्वाह वाला देख भाल का काम बढ़ा है, साथ में जल्दी शादी होना, बहिष्कार, देख भाल न होना, यह सब भी बढ़ा है। आपसी साथ और एकजुटता बढ़ाने की जगहें और संभावनाएंकम हो गयी हैं।

फील्ड से मिले डेटा के अनुसार

80% लड़कियों का कहना था कि घर के सारे कामों का जिम्मा उनके ही सर पड़ता है लॉकडाउन के टाइम जब घर पर सारे लोग होते हैं, तब भी।

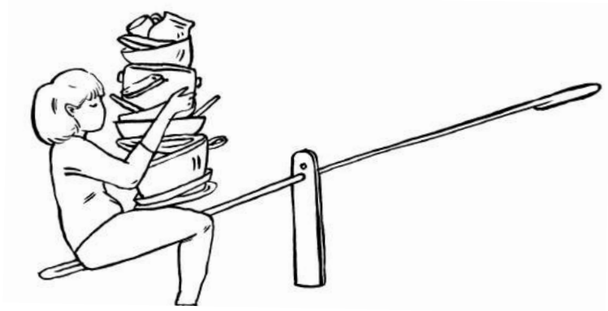

71% ने कहा कि उन्हें घर की और औरतों से मदद मिलती है।

9% केवल 9 % रिश्तेदार जो आदमी हैं घर के काम में मदद करते हैं।

29% को लगा कि लड़कियों की जाति, उनका आर्थिक वर्ग या उनकी विकलांगताओं की वजह से भी उन्हें बहिष्कृत किया गया है।

जिनको ऐसा लगा, उनमें से :

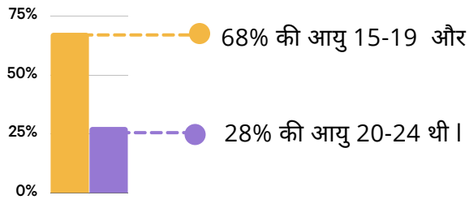

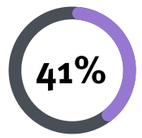

की पहचान ओ.बी.सी है।

हिन्दू
मुस्लिम

जवाब देने वाली मुस्लिम लड़कियों में से 35 % ये मानती हैं और 15 % हिन्दू लड़कियाँ ऐसा मानती हैं

16% लखनऊ से हैं
34% मुंबई से हैं
18% पुणे से हैं

42% लड़कियाँ मानती हैं कि कोविड - 19की वजह सेशादी का प्रेशर बढ़ गया है। सबसे ज़ायदा, 16 साल की लड़कियों ने इस दबाव को महसूस किया।

जिनको ऐसा लगा, उनमें से :

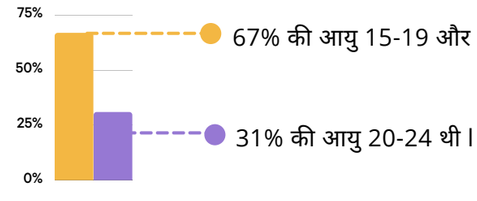

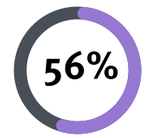

की पहचान एस.टी/एस. सी/ओ.बी.सी है।

हिन्दू
मुस्लिम

38% की पहचान मुस्लिम और 56% की हिन्दू।

30% मुंबई से हैं
18% पुणे से हैं

फील्ड से आती आवाज़ें

घर के रोज़ मर्रा के काम बढ़े

"मुझे माँ के साथ रसोई में काम करना पड़ता है क्यूंकिक्योंकि हर कोई सारा समय कुछ न कुछ खाना चाहता है।"
-उम्र 18, अलवर

"'लॉकडाउन के पहले मुझे केवल शाम को माँ का हाथ बंटानाहोता था पर अब मुझसे यहउम्मीद की जाती है कि लगभग सारा समय मैं उसके साथ काम करूँ।"'
- उम्र 22, पुणे

वंचित की गयींलड़कियों की और बाधाएँ

"मुझे वहकरना पड़ता है जो सब चाहते हैं कि मैं करूँ। अगर मैं बालकनी में जा कर खड़ी हो जाती हूँ और दोस्तों से बात करती हूँ , मेरे माँ बाप मुझसे पूँछते हैं : तुम बाहर खड़ीहो करज़ोर ज़ोर से क्यों बात कर रही हो ? पड़ोसी क्या सोचेंगे? किस किस्म की लड़की हो? ...जब मैं कुछ अच्छा करना चाहूँ, उसको बुरा समझा जाता है।"
- उम्र 16, पुणे

"मुझे अब जीन्स और शॉर्ट्स पहनने नहीं दिया जाता, मुझे यह पहनना पसंद है। मेरी लाइफ अब उतनी अच्छी नहीं है।"
- उम्र 16, पुणे

"हमें अपने त्यौहार मनाने की इजाज़त नहीं, पर और लोगों ने मनाये। मेरा भाई शॉपिंग करने गया और मुझे किसी ने मार्केट चलने के लिए नहीं कहा।"
- उम्र 14 लखनऊ

"इस साल लॉकडाउन की वजह से मैं अपने माता पिता परऔर निर्भर हो गयी हूँ।"
-विकलांगता के साथ जी रही,
उम्र 22,
अहमदाबाद

"मेरी विकलांगता की वजह से मैं वैसे भी थोड़ा बहुत ही इधर उधर जा पाती थी। मेरी माँ मुझे कभी -कभी ले जाती थी। लॉकडाउन के होते ही मैं घर तक सीमित हूँ।
- विकलांगता के साथ जी रही लड़की
उम्र 14, मुंबई

"मैंने प्रवास किया और अब मैं अपनी बहन और उसके परिवार के साथ रहती हूँ।घर के मामलों में मेरी नहीं सुनी जाती है और मुझे हमेशा ऐसे फील कराया जाता है कि मैं बोझ हूँ।"
- जवान औरत
जिसका डाइवोर्स हुआ,
उम्र 18 अहमदाबाद

"मुझे मानसिक स्वास्थ्य की प्रॉब्लम हैऔर कोविड लॉकडाउन के दौरान यहबढ़ गया है। मेरे माता पिता ने मेरी मदद करने की कोशिश की है, पर वे खुद फ़्रस्ट्रेट हो गए हैं"
- उम्र 19 मुंबई

"अपने पिता को खोने के बाद, मेरे परिवार वालों ने मेरे और मेरी माँ के साथ पक्षपात किया , हमारे खिलाफ हो गए। वे सब बहुत अंधविश्वासी भी हैं , इसलिए हमें त्यौहारों और सांस्कृतिक फंक्शन में शामिल नहीं किया जाता।"
- उम्र 18 मुंबई

लीडर लैब के नज़रिये से

लीडर लोगों ने इस बात पर रोशनी डाली कि कोविड 19 की वजह से लड़कियों पर लगे प्रतिबंध और बढ़ गए। कभी अजीब-अजीब कहानियों और अफवाहों ने, तो कभी गलत जानकारी ने गड़बड़ और बढ़ाई। अब क्योंकि बहुत सारी लड़कियों के पास फोन नहीं थे और वे अपने दोस्तों से भी मिल नहीं पा रही थीं, इसलिए जो भी बड़े लोगों और परिवार के लोगों ने कहा, उन्होंने मान लिया।"आमतौर पर भी लड़कियों को एक हद तक ही आज़ादी दी जाती है। लेकिन जब लॉकडाउन की वज़ह से सब लोग घर में ही फँसे रहते थे, तब उनकी बची-खुची आज़ादी में भी कटौती होने लगी।घर के लोग उनकी हर चाल-ढाल पर राय बनाने लगे- "

–रोशनी
लीडर्स लैब, लखनऊ

फील्ड से सलाह

लीडर लड़कियों ने दुनिया में अपनी जिस सलाह को सबसे ज़्यादा ज़रूरी माना है, उन्हें नीचे बैंगनी रंग में हाईलाइट किया गया है।

समुदायों के साथ

जेंडर समानता/इक्वालिटी पर जागरूक नज़रिया बनायें जो लड़कियों को, उनके फैसलों को और उनकी पसंद-नापसंद को अहमियत दें।

उन पारंपरिक और रूढ़िवादी कायदों और प्रथाओं को बदलें जो औरतों और लड़कियों के साथ भेद - भाव करते हैं।

लड़कियों के साथ

लड़कियों और युवा औरतों को जिंदगी के ज़रूरी हुनर में निपुण करना ताकि वेसक्षम बनें।

लड़कियों और युवा औरतों को उनके अधिकार और उनकी आज़ादी के बारे में जानने-समझने और राय बनाने में मदद करें।

प्रैक्टिशनर का नज़रिया

"लड़कियों को जिस तरह सीमित अधिकारों और (कम) आज़ादी के साथ जीना पड़ता है, उसे देखकर दुःख जरुर होता है, पर आश्चर्य नहीं! लड़कियाँअपनी देखभाल पर बहुत कम समय देती हैं।और दरअसल यह भी कोई अचरज़ की बात नहीं हैबल्कि इससे यह और साफ हो जाता है कि लड़कियों और युवा औरतों को समर्थन की कितनी ज़रुरत है! उनको भी अपनी जगह चाहिए, आराम चाहिए, वह हिम्मत चाहिए जिससे वे दर्दनाक अनुभवों से बाहर निकल सकें।"

- **रुबी जॉनसन**
जेंडर जस्टिस की सलाहकार/ लड़कियों और औरतों के अधिकार की विशेषज्ञ।

एस.डी.जी 3

अच्छा स्वास्थ्य और रख-रखाव

फील्ड से मिले डेटा के अनुसार

मानसिक स्वास्थ्य

कोविड के आसपास जो बातचीत है, वो ज़्यादातर कोविड-19 से शारीरिक स्वास्थ्य को होने वाले खतरों से संबंधित रहे हैं। जबकि सच तो यह है कि कोविड ने मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर किया है, खासकर लड़कियों के। हमारे सवालों का जवाब देने वालों ने बताया कि उन्हें कई मुश्किल चुनौतियों और मुद्दों से जूझना पड़ा अनिश्चित काल में आपसी दूरियों का बढ़ जाना और मां-बाप की चिंताएं- सब उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर कर रही थीं। वे अपनी भावनाओं को सही तरीके से काबू नहीं कर पा रही थीं।

लड़कियों ने मानसिक परेशानी और निराशा का अनुभव किया, जिनमें शामिल हैं: डिप्रेशन/ अवसाद, सुस्ती के साथ उदासी, आत्मविश्वास की कमी, अकेलापन और लाचारी।

उनमें से **लगभग आधी लड़कियों ने बताया कि उनमें नकारात्मक सोच** आती रहती है। वे गतिविधियाँ जिन्हें वे आमतौर पर मज़े से करतीं थीं अब उन्हें उत्साह से नहीं कर पाती हैं।

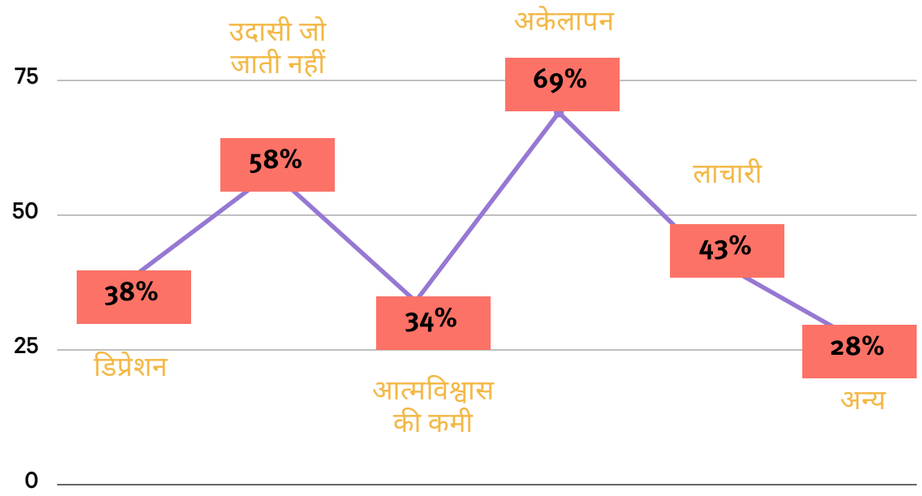

लीडर लैब के नज़रिए से

लड़कियों ने महसूस किया कि जवाब देने वालों में से अधिकांश ने मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित एक या एक से ज़्यादा चुनौतियों का सामना किया है और क्या किया जा सकता है, उनको और कुछ नहीं पता था !बस उनका कहना था कि अपने दोस्तों और टीचर से बात करने की बहुत इच्छा थी।और अपने परिवार से वे ये सब बातें करना नहीं चाहती थीं लीडर लड़कियों ने मानसिक स्वास्थ्य के लिए संसाधन/रिसोर्स बनाने के महत्व पर ज़ोरदिया।ठीक वैसे, जैसे सरकार और गैर-सरकारी संगठनों (एन जी ओ ने कोविड 19 से बचाव के लिए आसान तरीकों और सावधानियों को हर किसी तक पहुँचाया एक लीडर लड़की ने कहा, “लड़कियों को अपने दोस्तों या टीचर्स से अपनी समस्याओं के बारे में बात करनी चाहिए। घर पर, माँ -बाप लेक्चर देने लगते हैं या तो उन्हें ही दोष देते हैं। लेकिनजब कोई उनकी परेशानियों को ढंग से सुनता है, तो वे बेहतर महसूस करती हैं।" लीडर्स ने यह भी महसूस किया कि स्कूल या कॉलेज ना जाने की वजह से लड़कियाँ अपने संगी-साथियों से मिल नहीं पा रही थीं। स्कूल और कॉलेज की वह नार्मल दिनचर्या, जहाँ दोस्तों और विश्वसनीय बड़ों से मिलना-जुलना होता है, जो मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियों से निपटने में मदद करती है।

फील्ड से आती आवाज़ें

“मैं उदास और असहाय सा महसूस करती हूँ।कुछ भी करने का दिल नहीं करता।हमेशा फिक्र लगी रहती है और सहमी-सहमी रहती हूँ ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।“
- उम्र 16, मुंबई

“मेरी पढ़ाई पूरी तरह से बंद हो गई है पिताजी की नौकरी चली गयी। हाल ही में उन्होंने कुछ काम शुरू किया है पर उससे उतनी कमाई नहीं हो पा रही है।समझ में नहीं आ रहा है जिंदगी का सामना कैसे करूँ" - उम्र 17, दिल्ली

“मैं अपने भविष्य को लेकर हमेशा ही चिंतित और डरी हुई रहती हूँ।घर के काम का दबाव भी बढ़ गया है। ऊपर से माँ -बाप हर समय डाँटते रहते हैं। स्कूल छूटने की वजह से अपने दोस्तों से भी नहीं मिल पाती हूँ।"
- उम्र 15, पुणे

"पहले हमारा गुज़ारा हो जाता था लेकिन अब हमारे पास कोई जमापूंजी बाकी नहीं रही है। अब हमारे लिए रोज़ाना के इस्तेमाल की चीज़ें खरीदना मुश्किल हो गया है।"
- उम्र 16, बरेली

“मैंने अपने परिवार के दो सदस्यों को खो दिया और उनके अंतिम संस्कार में भी नहीं जा पाई।मुझे हर समय निराशा महसूस होती है। ”
- उम्र 18, लखनऊ

होप पर एक स्पॉटलाइट

"जवाब देने वालों में से सिर्फ 26% ही भविष्य को लेकर पॉजिटिव, खुश, हँसमुख, आशावादी, सुरक्षित, उम्मीद से भरे और कम तनावपूर्ण महसूस कर रहे थे।

“मैंने पेंटिंग करना शुरू किया। इससे मुझे खुशी मिलती है।"
- उम्र 16, बरेली

“जब स्कूल शुरू होगा तो मैं क्या-क्या करना चाहूँगी, इसके बारे में लिखती हूँ । यह मुझे प्रोत्साहित करता है।“
- उम्र 17, पुणे

"मेरी बहन ने मुझे नई चीजें सीखने में मदद कीऔर मेरे भाई ने नई-नई खाने की चीजें बनाने में।"
- उम्र 17, अलवर

"मैंने अपने माँ -बाप और भाई-बहनों के साथ क्वालिटी टाइम बिताया।"
- उम्र 16, लखनऊ

शारीरिक स्वास्थ्य

जवाब देने वालों में से ज़्यादातर लड़कियों ने यह शेयर नहीं किया कि लॉकडाउन का शारीरिक स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव हुआ?
सिर्फ तीन लड़कियों ने अपने बीमार होने की सूचना दी।
कई प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य सेवा और जानकारी तक पहुँच में दरार एवं सेवाओं की महंगाई को वर्णित किया।

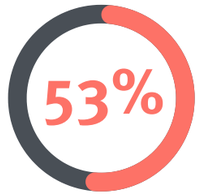

कोविड 19 और लॉकडाउन के दौरान जवाब देने वालों में से, जिन-जिन को डॉक्टर के पास जाने की ज़रुरत हुई, उनमें से 53% ने यह बताया कि जब वे जाना चाहते थे, नहीं जा पाए।

ने बताया कि वो लगातार डरते है की उन्हें COVID 19 की बिमारी न हो।

का मानना था कि सामाजिक भेदभाव ने जाति-आधारित हिंसा में बढ़ौती लायी है और लॉकडाउन के दौरान कम्युनल झगड़े जैसे भेदभाव को जन्म दिया है।

“पहले तो हम पास वाले सरकारी अस्पताल जाया करते थे।पर लॉकडाउन ने इस पर भी रोक लगा दी। जहाँ तक प्राइवेट हॉस्पिटल की बात है, वे इतने मँहगेथे कि हमारी पहुँचके बाहर थे।" - उम्र *22*, दिल्ली

Where do you go to find out about COVID-19?

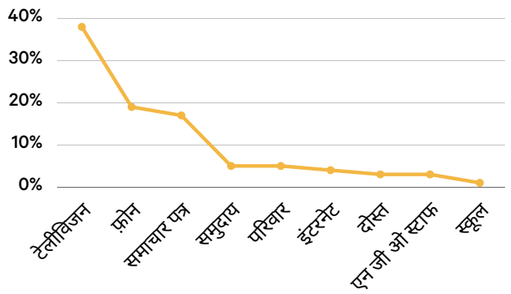

को मास्क और सेनिटाइज़र मिले।

"गैर सरकारी संगठनों (एन जी ओs) ने जो औरतों के लिए खाना, फेस-मास्क और स्वच्छता/हाइजीन का सामान उपलब्ध कराया, उससे बहुत राहत मिली।"
- उम्र 18, दिल्ली

का मानना था कि वे शारीरिक दूरी बनाए रखने में असफल रहीं।

लीडर लैब के नज़रिए से

लड़कियों ने माना कि कोविड 19के कारणसंसाधनों/रेसोर्सेस को नियमित स्वास्थ्य सेवाओं में से हटा दिया गया था।इससे कम अधिकार वाले या गरीब-कमज़ोर लोग मूल स्वास्थ्य सेवा हासिल करने में असफल रहे!इसके अलावा, लड़कियों और उनके परिवारों को कई तरह के आर्थिक बोझ उठाने पड़े,। जिनकी वजह से वे स्वास्थ्य सेवाओं का खर्चा नहीं उठा पाए।
लड़कियों ने बताया कि मास्क, सेनिटाइज़र और लगातार हाथ धोने में लगने वाली चीजों के वितरण में एन जी ओ ने प्रमुख भूमिका निभाई। उनका मानना था कि अगर नागरिक समाज (सिविल सोसाइटी) ने यह पहल नहीं की होती, तो लॉकडाउन के दौरान जरूरी सामान उन तक कभी नहीं पहुँच।

3 GOOD HEALTH AND WELL-BEING

मासिक धर्म संबंधित स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ

जवाब देने वालों में 96% का मासिक धर्म आ चुका था और 4% का नहीं।

अभीजिन लड़कियों को मासिक धर्म आ चुका है, उनमें से:

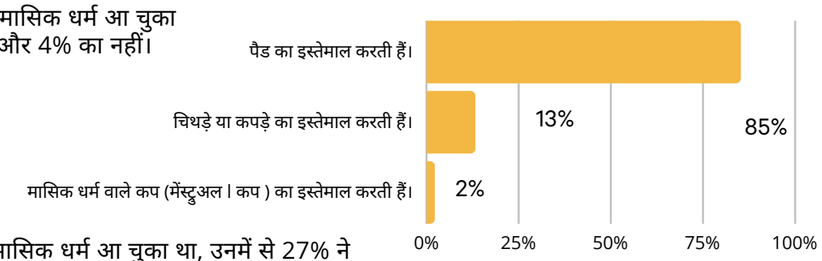

जिन्हें मासिक धर्म आ चुका था, उनमें से 27% ने बताया कि कोविड 19 की वजह से उन्हें स्वच्छता /सैनिटेरी उत्पाद मिलने में दिक्कत हुई।

फील्ड से सलाह

लीडर लड़कियों ने दुनिया को जो खास सलाह दी, उनपर यहाँ प्रकाश डाला गया है लाल में

मानसिक स्वास्थ्य

अवसाद/डिप्रेशन और तनाव से निपटने के लिए लड़कियों और युवा औरतों की काउंसलिंग में इन्वेस्टमेंट करें।

परिवारों के साथ ऐसे काम करें जिससे घर के अंदर एक मजबूत समर्थन का माहौल बनेऔर एक दूसरे की बात को सुनने और उसपर एक्शन लेने की क्षमता बढ़े।

माहवारी

सेनेटरी पैड सस्ते दामों में मिलें और आसानी से हर जगह मिलें ।

मासिक धर्म से संबंधित शर्म और लांछन का माहौल कम किया जाए।

हेल्थ केयर सुविधाएँ और उनकी पहुँच

बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच में सुधार हो और हर चौथे महीने शारीरिक जाँच के साधन और दवाएँ दी जाएँ ।

लीडर लैब के नज़रिये से

- लीडर लड़कियों ने बताया कि लॉकडाउन की वजह से शुरुआत में सेनेटरी उत्पादन की कमी रही। कारण यह था कि स्कूल बंद थे, बहुत कम दुकानें खुला करती थीं और लड़कियाँ आसानी से घर के बाहर नहीं जा पाती थीं। हालाँकि एन जी ओ ने अपने कोविड 19 राहत प्रयासों के तहत इन उत्पादों को ज़रुरतमंद लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।
- लीडर लड़कियों ने यह भी देखा कि जवाब देने वाली लड़कियों में से कुछ मासिक धर्म के बारे में बात करने में संकोच कर रही थीं। वे इससे जुड़े सवालों के जवाब देने में कतरा रही थीं !

एस डी जी 4

बढ़िया शिक्षा

लड़कियों ने सबसे ज्यादा शिक्षा के विषय पर बात की । कोविड-१९से इसपे क्या असर हुआ, उन्होंने इसकी बात की। साथ में यह भी बात की, कि इस दौरान हुए नुकसान की भरपाई करने के लिए, कोविड-१९ के बाद क्या करना चाहिए।

फील्ड से मिले डेटा के अनुसार

70% जवाब देता अभी स्कूल और कॉलेज में है

85% का ऑनलाइन स्कूल चल रहा है।

28% नागरिक समाज संगठन की मदद से पढ़ाई जारी रख सकीं

23% कम्युनिटी आधारित कक्षाओं की मदद से शिक्षा ले सकीं

52% जिन लड़कियों के पास उपकरण हैं, उनमें से 52% मेट्रो शहरों से हैं।

30% जवाब देता स्कूल कॉलेज नहीं जा रहे।

37% ने घर के काम की वजह से स्कूल छोड़ा ।

31% ने कोविड-१९ की वजह से स्कूल छोड़ा।

24% ने स्कूल में कोई रुचि ना होने के कारण स्कूल छोड़ा।

18% कोविड-१९ की वजह से पढ़ाई छोड़ने वालों की संख्या

13 लड़कियां स्कूल जाने वाली उम्र की हैं।

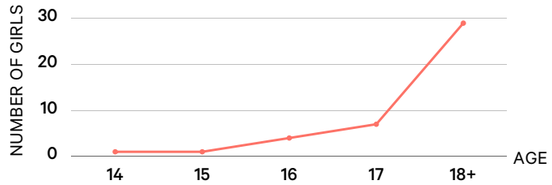

Number of girls not going to school as per their age

4 QUALITY EDUCATION

"शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण विषय है। कोविड-१९ के दौरान कक्षा ऑनलाइन चलने लगी।..... मुझे नहीं लगता ऑनलाइनकक्षा सब तक पहुंच सकती हैं। ज्यादातर छात्र छात्राओं के पास स्मार्टफोन और लैपटॉप है ही नहीं। ऑनलाइन कक्षा लेने की क्षमता ना होने के कारण, उन्हें शिक्षा से वंचित होना पड़ा। ऐसे में, वह अपने लिए अच्छा भविष्य नहीं बना सकते और ना ही उनके पास अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए कोई संसाधन है"।अलवर से २ ० वर्षीय लड़की का कथन।

Of the girls who are in school

72% लड़कियों के पास, ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के साधन होने की वजह से वह ये शिक्षा ले सकी।

33% के पास इंटरनेट था।

13% के पास फोन में इंटरनेट था।

53% के पास कंप्यूटर था।

28% के पास जरूरी साधन थे ही नहीं ।

79% % ने इसका कारण, पैसे की कमी बताई।

10% ने कहा कि उनका स्कूल ऑनलाइन पढ़ाई नहीं करा रहा।

28% ने कहा कि उनके घर में एक से ज्यादा भाई बहनों को ऑनलाइन साधन चाहिए।

64% महिलाओं और लड़कियों का कहना था कि उनके पास ना तो ऑनलाइन पढ़ाई के लिए जगह है और ना ही समय।

फील्ड से आती आवाज़ें

स्कूल की सुविधा

"हमारे स्कूल में बहुत कुछ है। मुझे अपने दोस्तों और अपनी कक्षा की बहुत याद आती है।"
- उम्र १७ साल, पुणे

"मेरा परिवार अब आगे स्कूल का खर्चा नहीं उठा सकता था।"
- उम्र १७ पुणे

"'फीस नहीं दे पाने के कारण मुझे कॉलेज छोड़ना पड़ा।"
-उम्र २० अहमदाबाद

दूरवर्ती/ रिमोट पढ़ाई

"अब क्लासएकदम अलग तरह से ली जाती है। मुझे समझ नहीं आता कैसे पढ़ाई करूं?"
- उम्र १६, दिल्ली

"'ऑनलाइन सिखाए जाने वाले पाठ, मुझे समझ नहीं आते। मैं ना तो टीचर से कुछ पूछ सकती हूं ना ही कक्षा के और बच्चों से।"
- उम्र १७ ,अहमदाबाद

"मेरे पास ऑनलाइन कक्षा से जुड़ने का कोई भी संसाधन नहीं है। इसलिए मैं कॉलेज को मिस करती हूँ ।"
- उम्र २० अलवर

"मुझे लैपटॉप इस्तेमाल करना नहीं आता। समझ नहीं आता कैसे क्लास वर्क करूं और कैसे होमवर्क खत्म करूं।"
- उम्र १९ दिल्ली

अन्य बाधाएं

"घर में रहकर पढ़ना लिखना बहुत मुश्किल है। जब मैं कॉलेज जाती थी तब काफी समय होता था और जिस चीज की जरूरत होती, वह हर समय मिल जाती थी।

घर मेंहर समयशोरगुल रहता है ,पढ़ाई में ध्यान नहीं लग पाता।"
- उम्र २३ पुणे

"बहुत सारा बेमतलब का काम करना होता है और सिलेबस भी पूरा करना पड़ता है। इसमें ना तो परिवार से कोई मदद मिलती और ना ही कोई और कुछ बताने वाला होता।"
-उम्र १ ७ मुंबई

फील्ड से सलाह

लड़कियों ने दुनिया को जो सलाह देना सबसे ज़रूरी समझा, उसे नीले रंग में हाईलाइट किया गया है

पैसे की सहायता

आठवीं के बाद लड़कियों को **मुफ्त में बेहतर शिक्षा** दिलाने का काम करना।

स्कूल वापसी , स्कूल जारी रखने और उच्च शिक्षा देने के लिए , प्रोत्साहित करने के लिए स्कॉलरशिप देना।

सभी लड़कियां जो माध्यमिक स्कूल में हैं उनको मध्यान्ह खाना देना।

पढ़ाई के लिए जगह, किताबें, परिवहन तथा सामुदायिक स्तर पर लाइब्रेरी के लिए इन्वेस्टमेंट करना।

जिन लड़कियों को काम करना है, उनके लिए शैक्षिक अवसर बढ़ाना।

सुरक्षित स्कूल

सुरक्षित जगहों का निर्माण , और स्कूल के अंदर लिंग और जाती आधारित भेदभाव को खत्म करना।

केवल -लड़कियों वाले स्कूल बनाना, और शिक्षा के लिए बुनियादी ढांचे में इन्वेस्टमेंट करना।

सेल्फ डिफेन्स की ट्रेनिंग मुफ्त में देना शुरू करना ।

डिजिटल एक्सेस/ पहुंच

शिक्षा में डिजिटल की उच्च स्तरीय पहुंच

शिक्षा में ब्लेंडेड लर्निंग - जिसमें ऑनलाइन पढ़ाई और ऑफलाइन क्लासरूम वाली पढ़ाई दोनों हों में इन्वेस्टमेंट करना, जो कि महामारी के बाद भी फायदेमंद रहे।

मार्गदर्शक

युवा महिलाओं और लड़कियों के लिए ऐसे प्रोग्राम बनाना जहां उनका मार्ग दर्शन हो सके, उनको गाइडेंस मिले ।

> "लड़कियों और उनके परिवार वालों को और समुदायों को स्कूलिंग के और माध्यमिक शिक्षा/ सेकेंडरी एडुकेशन के फायदे समझना ज़रूरी है । ऐसे प्रोग्राम बहुत ज़रूरी हैं, जो लड़कियों को उनका होमवर्क करने में मदद करें और शिक्षा में सहायता दें ।ताकि हम, शिक्षा ठीक से न मिलने पे लड़कियों का स्कूल से निकाला जाना, रोक पाएं । " दीपा नाग चौधुरी, प्रोग्राम डायरेक्टर, पापुलेशन फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया

लीडर्स लैब से मिले विचार

लड़की लीडर्स ने यह पाया कि ज़्यादातर जवाब देने वालों के पास डिजिटल माध्यम से स्कूल में शामिल होने के लिए जरूरी उपकरण और संसाधन नहीं थे। जवाब देने वालों ने यह भी कहा कि डिजिटल पढ़ाई के साथ चलना मुश्किल है, और इसलिए वह पिछड़ रहे हैं। उनका यह भी कहना था, कि वर्चुअल कक्षा असली कक्षा की भरपाई नहीं कर सकती। ना तो वह एक दूसरे के साथ विचार विमर्श कर सकते हैं,ना टीचर्स के साथ सवाल- जवाब में भाग ले सकते । वह कक्षा के बाकी बच्चों से सहयोग और सद्भावना भी नहीं पा सकते। हालांकि ऑनलाइन पढ़ाई के फायदे भी हैं । जिन लड़कियों को उनके परिवार ने स्कूल जाने से रोक दिया था, वह पढ़ाई जारी रखने के लिए ऑनलाइन की सुविधा का इस्तेमाल कर सकती थी ।

एस.डी.जी 8

ढंग का काम जिससे इज़्ज़त मिले और आर्थिक विकास हो

कोई भी विपदा आती है तो उसका प्रभाव अलग-अलग जेंडर पर अलग ही होता है।और कोविड-19के साथ भी यही हुआ। महामारी ने परिवारों में जो आर्थिक तनाव पैदा किया, उसका सीधा असर लड़कियों के भविष्य की रूपरेखा पर पड़ा।

फील्ड से मिले डेटा के अनुसार

कोविड-19 के कारण

82% जवाब देने वालों में से 82%, करियर और नौकरी सम्बन्धित सलाह के लिए किसी के पास जा पाते तो अच्छा होता

59% ने बताया कि कोविड-19 ने पर्सनल और पारिवारिक, दोनों स्तर पर उनकी आमदनी को प्रभावित किया।

28% ने कहा कि उन्हें कोविड-19 के कारण कौशल/स्किल से जुड़ी ट्रेनिंग बंद करनी पड़ी।

13% ने कोविड-19 के दौरान अपनी नौकरी या घर से किये जाने वाले काम खो दिए।

महामारी से पहले:

34% जवाब देने वालों में से 34%, जिनकी उम्र 15-19 के बीच थी, पैसे कमाने वाले काम में लगे थे।

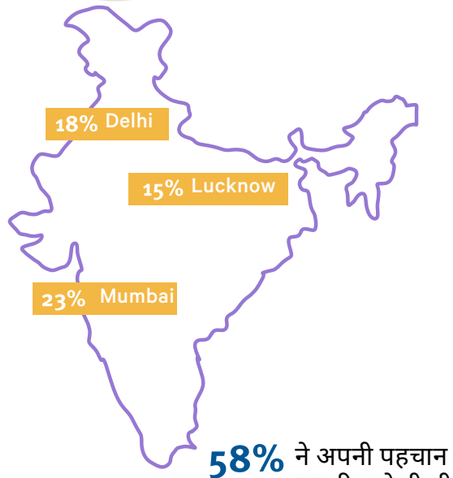

58% ने अपनी पहचान एस.सी/ एस.टी/ ओ.बी.सी के रूप में की ।

फील्ड से आती आवाज़ें

आय में कमी

"मैंने अपनी नौकरी खो दी और मेरे पास परिवार की और मेरी खुद की जरूरतों को पूरा करने के लिए कोई पैसे नहीं हैं।"
- उम्र 22, अहमदाबाद

"मुझे और मेरी बहन को स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि हमारे पिताजी की नौकरी छूट गई।"
- उम्र 17 दिल्ली

सुविधा की चीज़ खरीदने में असमर्थ

"हम अपना किराया,बिल कुछ भी नहीं दे पा रहे थे। यह बहुत मुश्किल समय था।"
- उम्र 24, मुंबई

"हम लंबे समय तक राशन नहीं खरीद पाए। इससे हमारे परिवार में बहुत क्लेश हुआ, झगड़े हुए।"
- उम्र 20, लखनऊ

"पहले हमारे पास काफी पैसे थे, लेकिन अब तो सारी बचत भी खत्म हो गई है। हमारे पास रोजमर्रा की ज़रुरत की चीजें खरीदने के लिए भी पर्याप्त पैसे नहीं हैं।"
- उम्र 16, बरेली

8 DECENT WORK AND ECONOMIC GROWTH

लीडर्स लैब से मिले विचार

- लीडर लड़कियों ने पाया कि उनके सवालों का जवाब देती लड़कियों में लॉकडाउन के दौरान पैसे की काफी तंगी थी। पहले तो उन्हें रिश्तेदारों या माता-पिता से नगद उपहार मिलते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं हो पा रहा था।
- जवाब देने वालों ने बताया कि नए फोन खरीदने का खर्च भारी पड़ा। उससे आर्थिक बोझ और लोन का चक्कर और बढ़ गया।
- जवाब देने वालों ने बताया कि सबके घर में होने की वजह से, घरेलू खर्च भी काफी बढ़ गए।
- “अगर लड़कियाँकुछ खरीदना चाहें, तो उन्हें परिवार के हर आदमी से पूछना पड़ता है लेकिन परिवार का दूसरा सदस्य किसी भी तरह की खरीदारी करे, तो उससे कोई सवाल नहीं पूछा जाता है।” - नेत्रावती (19, मुंबई)

कोई काम में कुशलता सीख पाने और पैसे कमाने के मौकों में कमी

"मैं नौकरी के लिए कई जगहों पर कोशिश कर रही हूँ , लेकिन कहीं भी सफलता नहीं मिली। लॉकडाउन के कारण कहीं नौकरियाँ ही नहीं हैं।"
- उम्र 21, लखनऊ

"लॉकडाउन की वजह सेलोकल मार्केट बंद हो गया था।मेरी माँ और मैं सामान बेच ही नहीं पाए।"
- उम्र 21, दिल्ली

"मेरा ट्रेनिंग सेंटर बंद हो गया और दूसरा केंद्र बहुत मँहगा है।"
- उम्र 20, पुणे

बचत में कमी और बढ़ते ऋण

"हमने जो भी बचत की थी, वो सब खत्म हो चुकी है।"
- उम्र 17, दिल्ली

"हमें दो बार किसी से क़र्ज़ लेना पड़ा।"
-उम्र 20, अलवर

उम्मीद

को अपने करियर संबंधित मौकों को लेकर अभी भी उम्मीद है।

सबसे ज्यादा उम्मीद 15-19 की उम्र वालों में देखी गई।

औसत परिणाम की तुलना में थोड़ी ज्यादा उम्मीद रखती थीं।

अलवर (83%), बरेली (83%), और लखनऊ (88%) की लड़कियों को औसत/एवरेज परिणाम से ज्यादा उम्मीद थी।

इन लड़कियों को औसत परिणाम से कम उम्मीद थी।

दिल्ली (71%), मुंबई (68%), अहमदाबाद (75%), और पुणे (44%)
एस.टी / एस.सी / ओ.बी.सी के अंतर्गत जो लड़कियाँ थीं

44% सभी जवाब देने वालों में से 44% ने कहा कि कोविड-19९ के दौरान अपनी पढ़ाई और काम सम्बन्धी मौकों के बारे में उन्होंने किसी न किसी की सलाह ली।

“आज स्थिति अच्छी नहीं है, लेकिन एक दिन सब ठीक हो जाएगा मुझे पूरी उम्मीद है।" उम्र - 24, मुंबई
"अगले दो साल मुश्किल होंगे, लेकिन धीरे-धीरे सब बेहतर होगा" उम्र - 20, मुंबई
"2020 की तुलना में यह साल बेहतर होगा" आयु - 17, मुंबई

लीडर लैब के नज़रिये से

"हाँ, उम्मीद तो है कि भविष्य बेहतर होगा, लेकिन तब, जब राज्य और समाज इन लड़कियों और युवा औरतों की बात सुनें।संदेश बिल्कुल साफ है- महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों का विस्तार उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वतंत्रता के विस्तार के साथ ही होना चाहिए।दोनों एक साथ मिलकर एक मजबूत कड़ी बनाते हैं और भारतीय समाज में अच्छा खासा बदलाव ला सकते हैं।आखिर के कुछ सालों में जो उलटफेर हुआ है, उसमें लेबर फ़ोर्स में जो औरतों की भागीदारी में गिरावट हुई है, वो खास रूप से चिंताजनक है।तो लड़कियों और औरतों ने ये कहा है कि ये बहुत ज़रूरी है कि उनके लिए काम के अच्छे अवसर पैदा करने में पैसा लगाया जाए।साथ ही साथ काम की जगह पर उनके साथ किसी तरह का पक्षपात ना हो।इस तरह के इन्वेस्टमेंट औरतों को सशक्त बनाने,आर्थिक विकास को गति देने और सबसे जरूरी - एक समान और न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए जरूरी हैं। ”

– डॉ. ए.के शिव कुमार
डेवलपमेंट इकोनॉमिस्ट और स्वतंत्र शोधकर्ता

लीडर्स लैब से मिले विचार

“उम्मीद की इन किरणों के पीछे बहुत सारे कारण हैं।पहला तो यह कि लॉकडाउन के दौरान चीजें इतनी ज्यादा खराब थीं कि एक बार जब लोग वापस थोड़ा खुलकर बाहर आने लगे, तो उनके अंदर अपने भविष्य को लेकर नई उम्मीदें जाग उठीं।इसके अलावा बहुत सारे सरकारी अधिकारी राशन बाँटने और सर्वेक्षण करने में लगे थे जिन्हें लोगों ने पहले कभी नहीं देखा था।एनजीओ के लोग भी समुदाय में काम करते हुए दिखने लगे। सब देखकर लोगों को लगा कि उन्हें सुनने वाले मौजूद हैंऔर फिर उन्हें एक अच्छे भविष्य की उम्मीद हुई।”
- प्रीति (24, दिल्ली)।

दुनिया के लिए सलाह

लड़कियों की सलाह मानें , तो सबको ज्यादा सक्रिय,आर्थिक रूप से स्वतंत्र और भविष्य की आर्थिक सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए।लीडर लड़कियों की दुनिया के लिए जो सलाह हैं, उनको प्राथमिकता के हिसाब से नीचे XXX में दर्शाया है

ट्रेनिंग

तकनीकी,कौशल बढ़ाने वाले और नौकरी दिलाने वाले ट्रेनिंग में इन्वेस्टमेंट करें और पढ़ाई में भी इस तरह की ट्रेनिंग, **खुद की क्षमता बढ़ाना और लीडरशिप के गुण सीखना,** इस सब को सिलेबस में शामिल करें।

जिन समुदायों में लड़कियाँरहती हैं,**उनके पास ही ये ट्रेनिंग सेन्टर** बनाये जायें।

लड़कियों को घर से ही **छोटे स्तर के व्यवसाय** शुरू करने के लिए ट्रेन करें।

रोज़गार/नौकरियाँ बनाना

रोज़गार बनाने वाली नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।

ट्रेनिंग को मार्केट से जोड़कर रोज़गार के नए अवसर पैदा करना।

विकलांग लोगों और जो कम पढ़े लिखे हैं, उनके लिए भी **नौकरी के अवसरों** पर ध्यान देना।

काम करने का अधिकार

काम करने की जगह पर सुविधाएँ उपलब्ध कराना और सुनिश्चित करना कि **औरतों के साथ किसी तरह का भेद -भाव न हो।**

औरतों के महत्व को समझें (चाहे वो नौकरीपेशा हो या हाउसवाइफ), उसके काम को स्वीकारें और सुनिश्चित करें कि **सबको एक काम का एक ही दाम मिले ।**

एस.डी.जी 11

लंबे समय तक रहने वाला शहर और समुदाय

एक बार जब लड़कियां किशोरावस्था में आ जाती है, तो शहरों में सार्वजनिक स्थान उनके लिए 'ऑफ लिमिट' हो जाते हैं; या तो हिंसा के खतरे के कारण या क्योंकि सार्वजनिक स्थान पर रहने वाली लड़कियों को 'सम्मानजनक' नहीं माना जाता है।
इस मुद्दे को उत्तरदाताओं ने बहुत गंभीर तारीखे से महसूस किया था।हमारे सवालों के जवाब देने वालों ने जेंडर के आधार पे हिंसा (जिसे GBV- Gender Based Violence कहते हैं) और **सार्वजनिक स्थान तक पहुँचना** के बारे में खुलकर बात की।

हिंसा सार्वजनिक मुद्दा भी है और निजी मुद्दा भी, और इसका संबंध औरतों पर होने वाले सामाजिक अत्याचार और दमन से है। हमने इस हिंसा के बारे में अपनी रिसर्च के एक हिस्से पे स्पॉटलाइट डाली, जो SDG ११ से सम्बंधित है। ये हमने इसलिए किया, क्यूंकि लड़कियां ये देखने की कोशिश कर रही थीं, कि हमारे शहर, समुदाय और हमारे सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, किस तरह से GBV (जेंडर आधारित हिंसा), जो समाज भर में फैली हुई है, का मुकाबला कर सकते हैं।

फील्ड से आती आवाज़ें

बाहर निकलना

"मैं बाहर जाना चाहती हूं लेकिन मुझे पता है कि ये सुरक्षित नहीं होगा और ख़ामख़ा ही मुझे पूरा परिवार लेक्चर देने लगेगा।"
-उम्र १६, लखनऊ

"ऐसी परिस्थितियों में बाहर जाना या दोस्तों को घर बुलाना, कुछ भी संभव नहीं है। पहले तो मैं हमेशा अपने करीबी दोस्तों के साथ घूम पाती थी।"
-उम्र २०, अलवर

"कोविड लॉकडाउन के नियमों की वजह से मैं अपने घर के पास वाले सामुदायिक शौचालय में भी नहीं जा सकती थी। जब मैंने शौचालय का इस्तेमाल करने की कोशिश की तो मुझे हिंसा का सामना करना पड़ा।

अब मुझे दूसरे समुदाय के शौचालय में जाना पड़ता है जो कि घर से दूर है।"
- उम्र २२, मुंबई

हिंसा और आक्रामकता

मुझे बहुत पीटा गया था। परिवार वालों से मुझे पूरा प्यार नहीं मिला।
-उम्र १२, मुंबई

लॉकडाउन के दौरान मेरे पापा बहुत पीते थे और मेरी माँ से लड़ते थे। मैं बहुत डर गई थी
-उम्र १६, मुंबई

खेल-कूद का अधिकार

फुटबॉल खेलना और उसके प्रैक्टिस सेशन में जाना, मुझे बहुत याद आता है।
-उम्र १४, मुंबई

मैं अब खेल नहीं पाती हूँ क्योंकि पार्क जाना मना है। मेरी बहन ने मुझे घर पर खेलने की सलाह दी लेकिन यहां ना तो टाइम मिलता है ना ही जगह।
-उम्र १५, पुणे

समुदाय में औरतों का जो जिम (gym) है, वो बंद है। मैं हर हफ्ते वहां जाया करती थी। अब तो एक्सरसाइस होता ही नहीं है। क्योंकि अपने परिवार के सामने में वो सब करने में मुझे शर्म आती है।
-उम्र २२, मुंबई

11 SUSTAINABLE CITIES AND COMMUNITIES

फील्ड से मिले डेटा के अनुसार

49% ने बाहर निकल पाने की आज़ादी में कमी के बारे में बताया और बताया कि उन्होंने ज्यादा बाधाएं झेलीं।

कहने को तो बाहर निकलने की आज़ादी किसी को नहीं थी। पर अपने घर के ५०% मर्द सदस्य के मुकाबले, सिर्फ १२% लड़कियों को बाहर खेलने या अपने दोस्तों से मिलने की छूट थी।

26% जवाब देने वालों का मानना है कि जी.बी.वी/ (जेंडर के आधार पे हिंसा) बढ़ गई है।

इनमें से

% जवाब देने वालों में से जिन्होंने माना कि जी.बी.वी बढ़ गई है

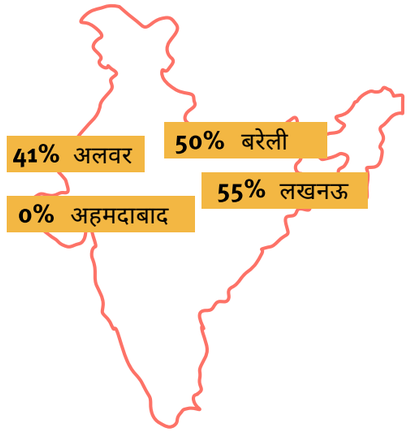

62% गैर-मेट्रो शहरों से हैं

66% 15-19 उम्र की लड़कियों का मानना है कि जेंडर आधारित हिंसा में बढ़ौती हुई है

59% जिन्होंने माना कि जी.बी.वी में बढ़ोतरी हुई है, वो एस.टी / एस.सी / ओ.बी.सी बैकग्राउंड से थे।

दुनिया के लिए सलाह

लीडर लड़कियों ने दुनिया के लिए जो सलाह हैं, उनको प्राथमिकता के हिसाब से नीचे बैंगनी में दर्शाया है-

मूल-भूत सुविधाओं/ इंफ्रास्ट्रक्चर की व्यवस्था

बुनियादी ढाँचे में सुधार करें, जैसे कि- आवास/हाउसिंग, स्वच्छ शौचालय, सुरक्षित और सस्ते ट्रांसपोर्ट, स्ट्रीट लाइट, पानी का सप्लाई और बिजली।

स्वच्छता

स्वच्छता और सफाई व्यवस्था में पैसे लगाएं ताकि लड़कियां और औरतें स्वस्थ जीवन जी सकें।

हरियाली से भरे, स्वच्छ, **प्रदूषण रहित** शहर बनाएं।

खेलने का अधिकार

लड़कियों और **युवा औरतों को खेल कूद** में हिस्सा लेने के लिए बढ़ावा देना चाहिए। खेल के मैदान और पार्क बनाने के लिए संसाधन इकट्ठा करना चाहिए।

सार्वजनिक सुरक्षा और आने जाने की आसानी

शहर के अंदर लड़कियों और औरतों के लिए **सुरक्षित और हिंसा रहित** जगह बनाएं।

जी.बी.वी को रोकने के लिए कानून और नियम बनाएं और सुनिश्चित करें कि वो लागू हों।

औरतों और लड़कियों के खिलाफ हो रहे यौन शोषण और हिंसा को रोकने के लिए **कानूनी प्रतिबंध लगाएं।** पुलिस को शामिल करें, निगरानी बढाएं और मुजरिमों को सजा दें।

उनके समुदाय उनकी सुरक्षा और खुल के बाहर जाने में जो मदद करते हैं, उन कोशिशों को इन्वेस्टमेंट करके सबल बनाएं । जिससे वो हिंसा या यौन शोषण जैसी चीजों से डरे बिना आगे बढ़ने के मौकों पे और संसाधनों तक पहुंच सकें।

जो पीड़ित है, उसे दोषी न ठहराया जाए, ये सुनिश्चित करने के लिए समुदाय के सदस्यों, लड़कों और लड़कियों के साथ जुड़ें। देखें कि जी.बी.वी./(जेंडर के आधार पे हिंसा) आम जीवन का हिस्सा ना बन पाए।

लीडर लैब के नज़रिये

- बाहर निकलना तो लड़कियों के लिए हमेशा से ही एक मुद्दा रहा है। लेकिन महामारी के दौरान ये मुश्किल और बढ़ गई। सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट सुविधाएं बहुत सीमित हो गई थी- खासकर कि बस, ट्रेन और ऑटो-रिक्शा। वैसे इस वजह से शहर काफी साफ- स्वच्छ और प्रदूषण रहित हो गए थे।

- सार्वजनिक जगह औरतों के लिए नहीं हैं। लड़के हमेशा ही वहां आवारागर्दी करते फिरते हैं। लड़कियां बाहर निकलने से डरती हैं। उन्हें हिंसा का और यहां तक कि बलात्कार का भी डर लगा रहत है।जब सार्वजनिक जगहों पर इंटरव्यू आयोजित किए गए, तो नेत्रवती (१९, मुंबई) ने बताया, “लड़कों के एक ग्रुप ने सिटी बजाकर हमें छेड़ना शुरू कर दिया। हम बहुत डर गए थे। हमें वहां हो रहे इंटरव्यू को रोकना पड़ा और प्राइवेट जगह पर जाकर उसे जारी रखना पड़ा।

11 SUSTAINABLE CITIES AND COMMUNITIES

कार्यकर्ता का नज़रिया

“एक ऐसा रास्ता निकालना होगा जिससे सामाजिक सोच बदले। औरतों, लड़कियों और तीसरे जेंडर के लोगों के खिलाफ जो जेंडर आधारित हिंसा सामान्य बनती जा रही है, उसे रोकना ज़रूरी है।निगरानी और सुरक्षा से लेकर एजेंसी और लड़कियों के अधिकारों तक की कहानी को बदलना पड़ेगा। ये सुनिश्चित करना होगा कि हिंसा के डर से औरतों का बाहर निकलना या सार्वजनिक जगहों पे जाना बंद ना हो।
सबसे जरूरी तो ये है कि समुदाय की लड़कियों और युवा औरतों को बदलाव ला पाने वालों के रूप में देखा जाए उनके बदलाव लाने की क्षमता में इन्वेस्ट किया जाए । क्योंकि हिंसा और भेदभाव के उनके अपने जीते जागते अनुभव हैं। उन्हें ये भी स्पष्ट रूप से पता है, कि बदलाव आखिर कहां लाना है। फंडिंग क्रिया के अंदर उनको 'वो लोग जिन्हें विकास चाहिए' के ग्रुप में नहीं रखना चाहिए । बल्किउन्हें जेंडर जस्टिस/जेंडर को इन्साफ दिलाने वाले एजेंट बनाकर सामने लाना चाहिए। "
-अपर्णा उप्पलूरी
कार्यक्रम अधिकारी, फोर्ड फाउंडेशन

“ये डेटा बिल्कुल सही है। मैंने ये सब अपनी आँखों से देखा है। लॉकडाउन के दौरान मैंने लड़कियों को बुनियादी ज़रूरतें उपलब्ध कराने में मदद की। मैंने देखा कि किस तरह शहरी क्षेत्र भी प्रभावित हुए हैं। विकसित और विकासशील शहरों का हिस्सा होने के बावजूद, लड़कियों को अभी भी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ...रिसर्च से जो पता चला, उसमें मेरा ध्यान इस बात पर गया कि इस पूरी स्थिति में जो भी शिकायतें आईं, वो औरतों द्वारा ही संभाली गईं।”
-सीमा दोसाद
२०, एम्पावर गर्ल्स एडवाइजरी काउंसिल मेंबर

प्रैक्टिशनर का नज़रिया: "५०% लड़कों की तुलना में सिर्फ १ २% लड़कियों को बाहर जाने, खेलने या दोस्तों से मिलने की आज़ादीथी। ये अंतर बहुत ज्यादा है। बड़े स्तर पर मुझे लगता है कि ये बातइस स्टडी के मानसिक स्वास्थ्य पहलू से भी संबंधित है "
-अभिमन्यु डे
एम्पावर लीडर्स लैब में संगठनात्मक प्रतिनिधि, एनाब्लिंग लीडरशिप, पुणे

- शिरीन (२२, मुंबई) ने अपनी राय देते हुए कहा कि शहर में हिंसा और धमकी के डर से लोग अपनी बेटियों की शादी जल्दी करवा देते हैं। उसने जिनके इंटरव्यू लिए थे उनमें से एक ने बताया कि उसके समुदाय में जेंडर आधारित हिंसा बहुत ज़्यादा थी। इस वजह से उस समुदाय में लगभग सभी लड़कियों की शादी जल्दी ही करा दी गयी थी। जवाब देने वाली लड़की खुद " २४ साल की थी और उसकी शादी नहीं हुई थी। सिर्फ इसलिए क्योंकि उसे विकलांगता थी"।

- "जिस किसी से भी मैंने बात की, उसने आज़ादी की कमी के बारे में बताया।लेकिन घर छोड़कर बाहर जाने को तो नीची नज़र से देखा जाता है।बहुत सी लड़कियाँ अपने ही शहर में घूमने की आज़ादी चाहती थीं।" ऋचा (१९, अहमदाबाद)।

लड़कियों की सलाह और एस.डी.जी का संयोजन

लीडर लड़कियों ने दुनिया के लिए जो सलाह दी हैं, उनको प्राथमिकता के हिसाब से नीचे नीले में दर्शाया है-

एस.डी.जी 5: जेंडर में समानता और एस.डी.जी १०: असमानताएं कम करना

हमारा मानना है कि ये दोनों चीज़ें लड़कियों की लिस्ट में सबसे ऊपर हैं, यानी उन्हें सबसे ज़रूरी लगती हैं । दूसरे एस.डी.जी हासिल करने में भी इनका योगदान सबसे ज़्यादा है।

समुदायों के साथ:

- **जेंडर समानता पर सही नज़रिये बनाने में करें जिससे लड़कियों, उनके फैसलों और उनकी पसंद-नापंसद को महत्व दिया जाए।**
- **पारंपरिक और रूढ़िवादी मानदंडों और प्रथाओं** को बदलें जो औरतों और लड़कियों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव करते हैं।

लड़कियों के साथ:

- लड़कियों और युवा औरतों को ज़िंदगी की ज़रूरी चीजों में कौशल हासिल करने में सहायता करके, उनकी क्षमता बढ़ाएं।
- **लड़कियों और युवा औरतों को उनके अधिकारों और आज़ादी से अवगत कराना और उसके लिए खड़ा होना सिखाना।**

एस.डी.जी 3
अच्छा स्वास्थ्य और रख-रखाव

मानसिक स्वास्थ्य

- डिप्रेशन और तनाव से निपटने के लिए लड़कियों और युवा औरतों को **काउंसलिंग** मिल सके, उसमें इन्वेस्टमेंट करें।

- घर के अंदर एक दूसरे का **समर्थन** किया जाए और **बातचीत** का माहौल बने, परिवारों के साथ इसपर मिलकर काम करें।

माहवारी

- सैनिटरी पैड सस्ते दाम पर आसानी से हर जगह मिलें।
- मासिक धर्म से संबंधित शर्म और अलग कराये जाने को कम करें।

हेल्थकेयर सुविधाएं और उनकी पहुंच

- बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच में सुधार हो और हर चौथे महीने शारीरिक जाँच के साधन और दवाएँ उपलब्ध हों।

एस.डी.जी 4
बढ़िया शिक्षा

वित्तीय/पैसे के द्वारा सहायता

- ग्रेड ८ से ऊपर की लड़कियों के लिए मुफ्त अच्छी शिक्षा उपल्ब्ध कराएं।
- ऊंची शिक्षा, स्कूल एकीकरण और पढाई में रुकावट ना आये, उसके लिए **छात्रवृत्ति/स्कॉलरशिप** उपलब्ध कराएं।जिनका स्कूल छूटा उनको संवेदनशीलता के साथ फिर से स्कूल से जोड़ा जाए
- सभी उम्र के लिए **मिड-डे मील**/ खाना उपलब्ध कराएं।
- किताबों में, पढाई के लिए सही जगह में, स्कूल आने-जाने में और समुदाय के अंदर लाइब्रेरी बनवाने में इन्वेस्टमेंट करें।
- उन लड़कियों के लिए **शिक्षा के मौकों** को बढ़ावा दें, जिन्हें जीने के लिए खुद कमाई भी करनी पढ़ती है।

सुरक्षित स्कूल

- स्कूलों के अंदर सुरक्षा का माहौल हो। स**कूलों के अंदर लिंग और जाति-आधारित भेदभाव को कम करना।**
- भेदभाव कम किया जाए।
- शिक्षा के बुनियादी ढांचे में इन्वेस्टमेंट करें, जिसमें वैसे स्कूल भी हों जो सिर्फ लड़कियों के लिए हों।
- **अपनी सुरक्षा** के लिए लड़कियों को ट्रेनिंग उपलब्ध कराएं।

डिजिटल शिक्षा की पहुंच

- डिजिटल शिक्षा तक पहुंचने के नए तरीके।
- पढ़ाई के मिक्स तरीकों में इन्वेस्टमेंट करें, जो महामारी के बाद भी फायदेमंद रहे।

संरक्षता/मेंटरशिप

- लड़कियों और युवा औरतों को गाइड करने के लिए प्रोग्राम डिज़ाइन करना।

एस.डी.जी 8
ढंग का काम जिससे इज़्ज़त मिले और आर्थिक विकास

ट्रेनिंग

- तकनीकी, कौशल बढ़ाने वाले और नौकरी दिलाने वाले ट्रेनिंग में इन्वेस्टमेंट करें। और पढ़ाई के इसी रूपरेखा में खुद की क्षमता बढ़ाने और लीडरशिप के गुण सिखाने का भी इंतेज़ाम करें।
- जिन समुदायों में लड़कियां रहती हैं, **उनके पास** ही ये ट्रेनिंग सेन्टर बनाये जाएं।
- लड़कियों को घर से ही **छोटे स्तर के व्यवसाय** शुरू करने के लिए ट्रेन करें।

रोज़गार उपलब्ध कराना

- रोज़गार बनाने वाले नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।
- ट्रेनिंग को मार्केट से जोड़कर रोजगार के नए अवसर पैदा करना।
- विकलांग लोगों और जो कम पढ़े लिखे हैं, उनके लिए भी नौकरी के अवसरों पर ध्यान देना।

काम करने का अधिकार

- काम करने की जगह पर सुविधाएं उपलब्ध कराना और सुनिश्चित करना कि औरतों के साथ **किसी तरह का भेद भाव न हो।**

- औरतों के महत्व को समझना। (चाहे वो नौकरीपेशा हो या हाउसवाइफ) उसके काम को स्वीकारना और सुनिश्चित करना कि सबको **एक काम का एक ही दाम मिले**।

एस.डी जी 11
लंबे समय तक रहने वाला शहर और समुदाय

ज़रूरी सुविधाओं/इंफ्रास्ट्रक्चर की व्यवस्था

- **बुनियादी ढाँचे में सुधार करें**, जैसे कि- आवास/ हाउसिंग, स्वच्छ शौचालय, सुरक्षित और सस्ते ट्रांसपोर्ट, स्ट्रीट लाइट, पानी का सप्लाई और बिजली।

स्वच्छता

- **स्वच्छता और सफाई** व्यवस्था में पैसे लगाएं ताकि लड़कियां और औरतें स्वस्थ जीवन जी सकें।
- हरियाली से भरे, स्वच्छ, **प्रदूषण रहित** शहर बनाएं।

सार्वजनिक सुरक्षा और गतिशीलता

- शहर के अंदर लड़कियों और औरतों के लिए **सुरक्षित और हिंसा रहित जगह बनाएं।**
- जी.बी.वी.(जेंडर आधारित हिंसा) को रोकने के लिए कानून और नियम बनाएं और सुनिश्चित करें कि वो लागू हों।

- औरतों और लड़कियों के खिलाफ हो रहे यौन शोषण और हिंसा को रोकने के लिए **कानूनी प्रतिबंध** लगाएं। पुलिस को शामिल करें, निगरानी बढाएं और मुजरिमों को सज़ा दें।
- उनके **समुदाय उनकी सुरक्षा और खुल के बाहर जाने में जो मदद करते हैं,** उन कोशिशों को इन्वेस्टमेंट करके सबल बनाएं । जिससे वो हिंसा या यौन शोषण जैसी चीजों से डरे बिना आगे बढ़ने के मौकों पे और संसाधनों तक पहुंच सकें।
- **जो पीड़ित है, उसे दोषी न ठहराया जाए,** ये सुनिश्चित करने के लिए समुदाय के सदस्यों, लड़कों और लड़कियों के साथ जुड़ें। देखें कि जी.बी.वी./(जेंडर के आधार पे हिंसा) आम जीवन का हिस्सा ना बन पाए।

खेलने का अधिकार

- लड़कियों और युवा औरतों को **खेल कूद में हिस्सा** लेने के लिए बढ़ावा देना चाहिए। खेल के मैदान और पार्क बनाने के लिए संसाधन इकट्ठा करने चाहिए।

स्टेकहोल्डर मैपिंग

एम्पावर टीम के साथ मिलकर, गर्ल लीडर्स ने विभिन्न स्टेकहोल्डर्स (हितधारकों) के खिलाफ अपनी प्राथमिकता के हिसाब से अपनी सलाह को पूरा करने के लिए एक अभ्यास किया, जो इन सलाह को वास्तविक रूप देने में ज़रूरी भूमिका निभा सकते हैं।
उन्होंने ऐसा करने के लिए हर सलाह के साथ एक उचित और स्पष्ट मांग राखी जो कि स्टेकहोल्डर्स को मदद कर सकती है इन सलाह को अच्छे से पूरा करने में।

एस डी जी 4
बढ़िया शिक्षा

वंशिता, 17, अहमदाबाद
शाहजहां, 18, मुंबई
गीता, 21 पुणे
पूजा, 19 मुंबई

सरकार

- महामारी के बाद, माध्यमिक स्कूल की लड़कियों के लिए ब्लेंडेड लर्निंग (शिक्षा के ऐसे अवसर जिंसमें ऑनलाइन के साथ क्लासरूम वालीशिक्षा, दोनों का इस्तेमाल हो) के विकल्पपर विचार करना ।ताकि वह चाहे तो ऑनलाइन पढ़ाई जारी रख सकें।
- डेटा पैक्स पर सब्सिडी देना
- समुदाय में डिजिटल हब बनाने के लिए बजट निर्धारित करना।
- माध्यमिक स्कूलों को लड़कियों के लिए १२वीं कक्षा तक मुफ्त करना।
- स्त्री पुरुष समानता को स्कूल पाठ्यक्रम में प्रमुखता से शामिल करना।
- पाठ्य पुस्तकों का आकलन कर, पढ़ाई में जेंडर के आधार पे पक्षपात को सुधारना।
- बेहतर सुविधाओं के द्वारा लड़कियों के स्कूल आवागमन को सुरक्षित बनाना।

नागरिक समाज (सिविल सोसाइटी)

- लड़कियों द्वारा टेक्नोलॉजी को इस्तेमाल करने की सीमा निर्धारित करने वाले गेटकीपर के साथ काम करना।
- कार्यक्रम के भागीदारों को प्रशिक्षण के लिए व्यवसायिक संस्थाओं से जोड़ना।
- डिजिटल केंद्रों में ब्लेंडेड लर्निंग *कार्यक्रम को चलाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना ।
- लड़कियों के बढ़ते ऑनलाइन प्रयोग के मद्देनजर,कंप्यूटर क्षेत्र में बढ़ते खतरे/ बढ़ते उत्पीड़न के तरीकों पर नजर रखना।

*ब्लेंडेड लर्निंग: शिक्षा के ऐसे अवसर जिंसमें ऑनलाइन के साथ क्लासरूम वाली शिक्षा, दोनों का इस्तेमाल हो

- स्कूल में शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए लड़कियों के ट्यूशन पर ध्यान देना।
- मां-बाप को समझाना ताकि वह अपनी बेटियों को स्कूल जाने से ना रोकें।
- शहर योजनाकार् :

- शहर की योजना में यह सुनिश्चित करना, कि स्कूल समुदाय के पास हो ,ताकि लड़कियों को बहुत दूर न जाना पड़े।
- आठवीं कक्षा के बाद लड़कियों को उच्च और उत्तम शिक्षा, मुफ्त में देना।

- केवल लड़कियों वाले स्कूलों सहित, शिक्षा के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश/इन्वेस्टमेंट ।

डिजिटल शिक्षा की और विस्तृत पहुंच ।
महामारी के अलावा भी ब्लेंडेड लर्निंग* विकल्प में निवेश/ इन्वेस्टमेंट।

उपाय

१] समुदायों , विशेषकर छोटे शहरों मैं, वाईफाई की पहुंच और चार्जिंग की सुविधा वाले डिजिटल केंद्रों की स्थापना।

२] डिजिटल केंद्रों और स्कूलों में ब्लेंडेड लर्निंग

३] समुदायों में मुफ्त वाईफाई

४] सहभागिता से डिजिटल पढ़ाई और प्रशिक्षण।

*ब्लेंडेड लर्निंग: शिक्षा के ऐसे अवसर जिंसमें ऑनलाइन के साथ क्लासरूम वाली शिक्षा, दोनों का इस्तेमाल हो

- सभी माध्यमिक स्कूलों को १२वीं कक्षा तक लड़कियों के लिए मुफ्त करना।
- मां-बाप को साथ लेना तथा किताबों के आकलन द्वारा स्त्री पुरुष के बीच पक्षपात को रोकना।
- लड़कियों के स्कूल आवागमन को छोटा और सुरक्षित बनाना।

शहर के योजनाकार

- समुदाय के अंदर डिजिटल केंद्रों के लिए जगह की योजना बनाना। विशेषकर उन शहरों में ,जहां बहुत कम इंटरनेट पहुंचा है।
- समुदाय में मुफ्त के वाईफाई के लिए ढांचा निर्मित करना।

अनुदान देता

- समुदाय में डिजिटल केंद्रों की स्थापना, और इनमें होने वाले नागरिक समाज कार्यक्रमों के लिए, पैसा देना।

बड़ी कंपनियां

- नागरिक समाज संस्थाओं के सहयोग से, डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शुरू करना।
- नागरिक समाज संस्थाओं के माध्यम से, लड़कियों को पुराने टैबलेट और लैपटॉप का इस्तेमाल दिलाना
- नागरिक समाज संस्थाओं के साथ मिलके काम करना, जिसके तहत, स्वयं सेवक कर्मचारी, लड़कियों को कम्प्युटर प्रशिक्षण दें ।

एस डी जी 3
अच्छा स्वास्थ्य और रख-रखाव

रिचा, 19 अहमदाबाद
अवध, 21 दिल्ली
रोशनी, 16 लखनऊ
आलिया, 18 पुणे
शुभांगी, 18 पुणे

सरकार

- पूरे देश के शहरी स्वास्थ्य सेवा -संबंधी बुनियादी ढांचे में इन्वेस्टमेंट।
- स्वास्थ्य के संबंध में महिलाओं की मदद के लिए, हेल्पलाइन नंबर जारी करना ।
- हर ३ महीने में शारीरिक जांच,; अस्पताल में लड़कियों के लिए विशेष दिन और समय निर्धारित करना जब कुछजांचें में मुफ्त हो सकें ।
- स्वास्थ्य सूचना संबंधित चार्ट बनाना, जिसमें सभी लड़कियों की तिमाही जांच के बदलाव को, दर्ज किया जाए।
- सरकारी स्कूल के पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य सत्र को शामिल करना और इसमें शामिल होंगे :
  - तनाव और आत्महत्या को रोकना
  - परीक्षा के दौरान मानसिक स्वास्थ संभालना
  - परीक्षा में फेल होने पर क्या करें
- शहरों की मुफ्त स्वास्थ्य क्लिनिको और दिल्ली की मोहल्ला क्लिनिको में, मानसिक स्वास्थ्य कर्मी मौजूद होने चाहिए।
- सरकारी वार्ताओं में, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सूचनाओं को, बिना आपत्तिजनक सोच और सवालों के, तत्परता से शुरू करना।

शहरी योजनाकार

- शहरी क्लीनिक के लिए स्थान मुहैया कराना :
- संसाधनों की कमी के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यह क्लीनिक लड़कियों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेंगी।
- इनमें सेनेटरी नैपकिन और साबुन के अलावा बिना किसी आपत्तिजनक सोच और सवालों के, यौन और प्रजनन संबंधित जानकारी दी जाएगी।
- तिमाही शारीरिक जांच की व्यवस्था होगी ।

नागरिक समाज

- मानसिक स्वास्थ्य और यौन शिक्षा संबंधी प्रोग्राम बनाना। इसके तहत न केवल संस्थाओं के अंतर्गत, बल्कि स्कूल और कॉलेजों में भी लड़कियों और महिलाओं के लिए विशेष मॉड्यूल तैयार करना।
- दहेज प्रथा से प्रताड़ित परिवारों कोपरामर्श देना क्योंकि दूल्हा दुल्हन और उनके परिवारों से बात करने के लिए अक्सर तीसरे व्यक्ति की ज़रुरत पड़ती है।

शहर के योजनाकरता

- मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात करने के लिए पब्लिक पार्कों में जगह बनाएं, ताकि इसे एक नार्मल बात समझा जाए, जो किसी के साथ भी हो सकती है।
- मानसिक स्वास्थ्य को एक आम बात/ नार्मल बनाने के लिए समुदाय में साईन और पोस्टर लगाना।

उत्तम प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुंच में सुधार, तथा तिमाही जांच और दवाईयो की उपलब्धता।

उपाय

- शहरी स्वास्थ्य सेवा केंद्रों[यू- सी एच सी एस] मैं इस प्रकार निवेश करना कि वह व्यापक पैमाने पर लड़कियों को सेवा दे सकें।
- लड़कियों की मदद के लिए स्वास्थ्य हेल्पलाइन का निर्माण
- लड़कियों और युवतियों के स्वास्थ्य की तिमाही जांच करना और चार्ट के माध्यम से स्वास्थ्य में आए बदलावों पर नज़र रखना।
- मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करने के लिए, शहर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में निवेश/ इन्वेस्टमेंट करना ।
- मानसिक स्वास्थ्य के बारे में पाठ्यक्रम, सार्वजनिक जगहों और सोशल मीडिया पर बात करके, उसे सामान्य करना ।
- मानसिक स्वास्थ्य और सेक्सुअल / प्रजनन स्वास्थ्य के लिए एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम बनाना ।.

फण्ड देने वाले

- अपने संगठन की योनजाओं में उन लोगों को शामिल करें, जिन्हें मानसिक स्वास्थ्य की दिक्कत है, या जो किसी दुख से उबरना चाहते हैं । लड़कियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए जो कदम उठाए जाएं, उन्हें फण्ड करना।
- आत्महत्या रोकने वाले और ड्रग्स और शराब के दुरुपयोग को नियंत्रित करने वाले प्रोग्राम को फण्ड करना।

कॉरपोरेट्स

- संस्था में काम करने वाले सभी लोगों के स्वास्थ्य बीमा और विकलांगता के लाभ को सुनिश्चित करना ।
- चिकित्सा स्थान/ बीमा / स्वास्थ्य में काम करने वाले कॉर्पोरेट : कम कीमत और छूट पर लड़कियों को बीमा और स्वास्थ्य योजनाएं प्रदान करना।
- मानसिक स्वास्थ्य को लेकर लोगों के मन में जो तिरस्कार है, उसे सोशियल मीडिया अभियानों और विज्ञापनों जैसे माध्यमों से दूर करना।
- डिप्रेशन और तनाव से निपटने के लिए लड़कियों और युवा औरतों को मानसिक स्वास्थ्य की काउंसलिंग मिल सके, ऐसे कामों में इन्वेस्टमेंट करना।

नागरिक समाज

- दुकानदारों को समझाएं कि काले प्लास्टिक की थैलियों में पैड को लपेटना बंद करें। उन्हें छुपाना बिल्कुल ज़रूरी नहीं है।
- मासिक धर्म से जुड़ी घृणा वाली सोच को हटाने के लिए परिवारों के साथ काम करना।

मासिक धर्म और सेक्स के सुरक्षित तरीकों के बारे में लड़कों से बात करना, ताकि बिन चाहे गर्भधारण के केस कम हो।

हमारे बदलते शरीर और मासिक धर्म के बारे में बताने के लिए स्पोर्टस का सहारा लेना।

सरकार

- जिन लड़कियों के मासिक धर्म शुरू हो गए हैं, उनके लिए अस्पतालों और समुदाय में पैड और दवाईयां उपलब्ध कराना।

उपाय

- मानसिक स्वास्थ्य और सेक्सुअल / प्रजनन स्वास्थ्य के लिए एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम बनाना, खासकर स्पोर्ट्स के माध्यम से।
- मासिक धर्म को सामान्य करने के लिए शौचालय की दीवारों पर कला के सहारे, संदेश लिखना।
- पैड उपलब्ध कराने के लिए डिस्पेंसर उपलब्ध कराना।

शहर के योजनाकरता

- शौचालय की दीवारों पर पेंट से मासिक धर्म के बारे में पॉजिटिव संदेश लिखवाना।
- सार्वजनिक शौचालयों, स्कूलों, अस्पतालों और समुदाय में सेनेटरी पैड डिस्पेंसर लगाना।

डोनर

- मानसिक और सेक्सुअल / प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकारों को संबोधित करने के लिए स्पोर्ट्स पे आधारित कार्यक्रमों में निवेश करने की सोचना।

कॉरपोरेट्स

- कर्मचारियों को मुफ्त में पैड उपलब्ध कराना।
- कोई भी महिला स्टाफ आगे बढ़कर , समुदाय में मासिक धर्म के बारे में बात कर सकती हैं।
- विज्ञापन अभियानों के माध्यम से मासिक धर्म से संबंधित घृणा वाली सोच को खत्म कराना।
- सैनिटरी पैड बड़े पैमाने पर उपलब्ध हों और सस्ते भी हों।
- मासिक धर्म से जुड़ी शर्म और घृणा कम करना।

एस.डी.जी 8
ढंग का काम जिससे इज़्ज़त मिले और आर्थिक विकास

प्रीति, 24 दिल्ली
मोनिका, 19 दिल्ली
ज्योति, 24 अलवर
रानी, 20 दिल्ली
सोनी, 20 मुंबई

नागरिक समाज

- भाग लेने वालों के लिए एक मजबूत एलुमनाई (पूर्व छात्र) नेटवर्क बनाना। और ये सिर्फ तब तक के लिए ना हो जब तक कि लड़कियों को नौकरी ना मिले। बल्कि ये उसके बाद भी बरकरार रहे।
- कॉरपोरेट्स के साथ मिलकर समझना कि मार्केट में कौन से कौशल जरूरी हैं। फिर उसके आधार पर अपने पाठ्यक्रम को बनाना। काम संबंधी ज़रूरी कौशल सिखाने के लिए स्वयंसेवकों की मदद लेना।
- लड़कियों को जीवन यापन के अलग/अलग विकल्पों से अवगत कराना (न सिर्फ वो, जिन्हें आमतौर पर लड़कियां जानती हैं)

सरकार

ऐसी योजना बनाएं जो लड़कियों के लिए रोज़गार कौशल पर ध्यान देना। साथ ही साथ पब्लिक स्पीकिंग और इंटरव्यू तकनीक जैसे जरूरी कौशल उपलब्ध कराना।

उपाय

एक साथ मिलकर काम करना और सारा ध्यान औरतों के काम और उनके हुनर बढ़ाने की ओर लगाना। इसके लिए:

- लड़कियों को ध्यान में रखकर स्कीम बनाना। उसमें जीवन यापन के अलग-अलग पहलू से उनको अवगत कराना।
- अपनी नीतियों में समान काम के लिए समान वेतन को लागू करना।
- कौशल बढ़ाने और रोजगार के लिए हितधारकों के साथ मिलकर काम करना।
- समुदाय के अंदर लड़कियों के लिए कौशल केंद्र बनाना।

शहर के योजनाकरता

- समान काम के लिए समान वेतन के महत्व को बढ़ाने के लिए शहर की दीवारों को आर्टिस्ट से पेंट कराना। उनको फण्ड करना।
- ट्रेनिंग और कौशल बढ़ाने के लिए समुदाय के अंदर सेन्टर बनाना। लड़कियों (खासकर शादीशुदा औरतों) को अक्सर सिर्फ दूरी की वजह से अपनी ट्रेनिंग /पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। इन केंद्रों को चलाने के लिए नागरिक समाज के साथ मिलकर काम करना।

डोनर/फंडिंग देने वाले

- अपनी आजीविका प्रोग्रामिंग का हिस्सा बनाकर ज़रूरी कौशल को फंड करना।

कॉरपोरेट्स

- नागरिक समाज और सरकारी कौशल सेन्टर के साथ मजबूत संबंध बनाएं। उनके साथ मिलकर मार्केट की ज़रुरत के आधार पर पाठ्यक्रम बनाना।
- नागरिक समाज के साथ स्वैच्छिक/वोलुन्टीरिंग वाले प्रोग्राम बनाएं जहां स्टाफ़ लड़कियों को जरूरी कौशल में ट्रेनिंग देना। वेतन को पारदर्शी/ट्रांसपेरेंट बनाना।
- अपने संगठन में औरत और मर्द के लिए समान वेतन की घोषणा करना। इसके लिए फॉर्मल तरीके अपनाना।
- अपनी कंपनी में नौकरी के लिए गैर सरकारी संगठनों/एन.जी.ओ. और सरकारी कौशल प्रोग्राम सेंटर में प्रचार करना।
- कंपनी के नियम-कानून, जेंडर के प्रति जागरूक होने चाहिए। उदाहरण के लिए: ये सुनिश्चित करना कि लड़कियां सुरक्षित रूप में घर वापस जा सकना।
- तकनीकी, कौशल बनाने वाले, और रोजगार संबन्धी ट्रेनिंग में निवेश करना। इसके अलावा अपनी क्षमता बढ़ाने और लीडरशिप ट्रेनिंग को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना।
- ऐसी नीति और कार्यक्रम विकसित करना, जो रोज़गार के अवसर बनना ।
- औरतों के काम की अहमियत समझें (चाहे वो पैसे कमाने वाला काम हो या बिना पैसे का किया गया काम)। और समान काम के लिए समान वेतन सुनिश्चित करना।

नागरिक समाज

- ऐसे कौशल बढ़ाने के पाठ्यक्रम तैयार करने चाहियें, जो विकलांगताओं के साथ जी रहे लोगों की ज़रूरतों पे भी ध्यान दें।

सरकार

- जो किसी विकलांगता के साथ जी रहे हैं, उनके लिए ऑनलाइन, घर पे ही कौशल बढ़ाने के प्रोग्राम पे गौर करना। उन लड़कियों के लिए भी, जिनके आने -जाने पर सख्त पाबंदियां हैं।
- सर्टिफिकेट पाने के लिए लिखित इम्तिहान की जगह, प्रैक्टिकल एग्जाम पे विचार करना।

"हर एक को कम्प्यूटर चलाना आता है, चाहे वो पढ़े लिखे हों या नहीं। पर क्यूंकि फाइनल इम्तिहान लिखित ही होता है, इसलिए इतने सारे लोग फेल हो जाते हैं।" ज्योति 24, अलवर

- नए कौशल सीखने के लिए ये बिलकुल भी ज़रूरी नहीं होना चाहिए कि आपने क्लास ८ के आगे की पढ़ाई की हो।

समाधान

- वंचित समाज के लोगों के लिए, नए कौशल हासिल कर पाना और आसान करना।
- ये करने के लिए, स्किलिंग सेंटर, जहां ये कौशल सिखाये जाते हैं, वहां लिखित इम्तिहान की जगह प्रैक्टिकल इम्तिहान रखना।
- ट्रेनिंग तक पहुँचने के लिए ये शर्त मत रखो, कि उस लड़की को पहले से शिक्षित होना चाहिए।
- महामारी के बाद, घर बैठे नए कौशल देने वाले प्रोग्रामों पे विचार करना। नगर के जो प्रोजेक्ट हों, उनमें सबसे कमज़ोर वर्गों के लोगों को नौकरी देना, ताकि उन प्रोजेक्ट में वो अपनी सोच शामिल कर पाएं।

शहर के योजनाकरता

- विकलांगताओं के साथ जी रही लड़कियों को शहर के प्रोजेक्ट पे काम देना, खासकर जो यातायात- सम्बंधित हों। इससे शहर का विकास कुछ यूं होगा, जो कई और लोगों के काम आये, कई और लोगों को साथ जोड़े।

डोनर/फंडिंग देने वाले

- विकलांगताओं के साथ जीते लोग को अपनी संस्था में नौकरी देना।
- ऐसे प्रोग्राम की फंडिंग करना, जो कम पढ़े- लिखे या फिर, विकलांगताओं के साथ जीते लोगों के कौशल को बढाए, जिनसे उन्हें नौकरी/रोज़गार मिल सके।

एस.डी.जी 11
लंबे समय तक रहने वाला शहर और समुदाय

प्रिया, 23, लखनऊ
ललिता, 16, दिल्ली,
खुर्शीदा, 20, लखनऊ,
शिरीन, 22, मुंबई,

सरकार

- नगर निगम को ये निश्चित करना चाहिए कि शौचालय बनाये जाएं और उनकी देख रेख का जिम्मा भी उठाना चाहिए।
- कम संसाधन वाले समुदायों को ये शौचालय इस्तेमाल करने के लिए, अपना पैसा खर्च करने की ज़रुरत नहीं होनी चाहिए।
- ये निश्चित करना चाहिए कि शौचालयों में ज़रूरत के हिसाब से पानी का सप्लाई हो।
- क़ानून लागू कराने वालों से सारे विभागों में, जेंडर को लेके संवेदनशीलता बढ़ाने पे इन्वेस्टमेंट करना। इस पे हर साल, वर्षाना सर्टिफिकेशन अनिवार्य होना चाहिए।
- इसका पाठ्यक्रमबनाने के लिए नागरिक समाज के साथ करीब से काम करना।

नागरिक समाज/ फंडिंग करने वाले

- शहर की प्लानिंग करने वालों के साथ नए प्लान और प्रोजेक्ट की परख करो - ये निश्चित करो कि वंचित समाज के लोगों को शहर के प्लान्स में शामिल किया जाए।
- क़ानून लागू करने वालों के साथ काम करो ताकि उनमें जेंडर को लेके संवेदनशीलता बढे , उन्हें सालाना सर्टिफिकेट कोर्स कराना।
- शहर के योजनाकर्ताओं द्वारा बनाये गए हिंसा रहित ज़ोन बनाओ में प्रोग्राम चलाना।
- लड़कियो कोउन हालातों का सामना करने के लिए ट्रेनिंग देना, जब उनके खिलाफ जेंडर के आधार पे की गयी हिंसा के लिए, उन्हें ही ज़िम्मेदार ठहराया जाता है।
- सामुदायिक स्तर पे ऐसे पाठ्यक्रमतैयार करो जो GBV (यानी जेंडर के आधार पे हिंसा) के मुद्दे को लेके, समुदाय के वयस्क और लड़कों को साथ जोड़े।

उपाय

- लड़कियों को निर्णय लेने में शामिल करना, शहर के अलग पहलू समझने के लिए नक़्शे बनाने, और ऐसी मुहीम चलाना, जिनसे लड़कियों की मौजूदकी और अधिकारों को और आवाज़ मिले।
- समुदाय के पास ही अच्छी देख रेख किये जाने वाले, सुरक्षित और फ्री शौचालय मिलें।
- जब शहर की प्लानगि हो रही हो, तो अलग अलग इंटेरसेक्शनलिटी/ अंतरस्तरीयता (यानी किसी इंसान के पहचान के अलग अलग पहलू, और कैसे ये समाज में उसके लिए फायदे/ नुक्सान के ख़ास तजुर्बे रचते हैं) को समझा जाए। ऐसी हिंसा रहित जगहें बनायी जाएँ जहां लडकियां इकठ्ठा हो सकें और साथ साथ, हिंसा का डर होने पे, वहां जा सकें।
- क़ानून लागू करने वालों को जेंडर को लेकर संवेदनशील होने की ट्रेनिंग देना और उन्हें वार्षिक सर्टिफिकेट भी देना।
- **ऐसे पाठ्यक्रम बनाना (ऐसे काम की फंडिंग भी करना),जो GBV/जेंडर के आधार पे हिंसा पर लड़कों और समुदायों के साथ काम कर सके।**

शहर के योजनाकरता

- लड़कियों की सलाह लो, तब, जब आप समुदायों की बुनियादी बातों की मरम्मत में लगे हो - इससे और साफ़ पता चलेगा कि कहाँ कहाँ पे कमियां हैं।
- समुदाय में ,ठीक ठाक मात्रा में, फ्री शौचालय के प्लान को शामिल करना। ये शौचालय, लडकियां जहां रहती हैं, उसके पास ही होने चाहियें।
- सामूहिक जगहों तक पहुँचने में लड़कियों को कितनी पाबंदियों का सामना करना पड़ता है, इसका एक नक्शा बनाना और इसके ज़रिये नए प्रोजेक्ट को और जागरूक बनाना।
- जान समझ के,सार्वजनिक स्थानों पे लड़कियों की मौजूदगी पे और ज़ोर देना चाहिए - एक मुहीम चलानी चाहिए, जिसके ज़रिये हम ये बात हम सबको बता सकें, कि शहर और सार्वजनिक स्थानों पे लड़कियों का हक़ है। ये नुक्कड़ नाटक, समुदाय में लड़कियों द्वारा दिए गए भाषण और स्पोर्ट्स के ज़रिये होना चाहिए।
- ऐसे खेल के मैदान होने चाहियें जिन्हें केवल लडकियां इस्तेमाल कर सकें।
- नागरिक समाज को साथ में लेना चाहिए ताकि वो समुदाय की ज़रूरतों को समझ सके।

शहर के योजनाकरता

- शहर में हिंसा से मुक्त ऐसी जगहें बनाना, जहां लडकियां मिल सकें, समय बिता सकें, संग काम कर सकें और अपना होमवर्क साथ करें। जब उन्हें किसी वजह से हिंसा से धमकाया जाए, तो लडकियां उस जगहआ सकें।

फण्ड देने वाले/ बड़ी कंपनियाँ

- ऐसे कामों के लिए फण्ड देना कि जिनसे लड़के और समुदाय, जेंडर के आधार पे हो रही हिंसा का सामना करना सीख पाएं। ताकि लड़के बदलाव लाने से जुड़ें, और उसपे ज़ोर दें।
- ऐसी सामुदायिक जगहें जो हिंसा रहित हों - उनकी आर्थिक जिम्मेदारी लेना, और उनकी देख रेख करना ।

हम यहां से कहां जाएंगे?

उन मुद्दों पर लड़कियों के साथ मिलकर चर्चा करें जो उन्हें प्रभावित करते हैं; जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढाओ या आईटीआई में काम करने के लिए कौशल सीखना; ये बैठक और चर्चा स्थानीय और जिला स्तर पर करें (और आगे के स्तर पर भी) ।

सिविल सोसाइटी

कार्यक्रम के डिजाइन और उसको इम्प्लीमेंट करते समय लड़कियों को शामिल करें और उन्हें समुदाय के भीतर होने वाले हस्तक्षेप में आगे बढ़ने और नेतृत्व करने का मौका दें।

शहरों को प्लान करने वाले

सभी नए शहर की योजनाओं और परियोजनाओं के लिए लिंग ऑडिट अनिवार्य करें। इस चीज़ का ध्यान रखें की इन बैठकों में किशोरी लड़कियों को शामिल करें और उनके विचारों और सलाहों पर काम करवाया जाए।

डोनर्स

अपने खुद के संगठनों के निर्णय लेने में लड़कियों को शामिल करें, खासकर उन कार्यक्रमों के लिए जो लड़कियों के लिए बनाये जा रहे हों।

कॉर्पोरेट्स

अपने खुद के संगठन के भीतर लिंग आधारित भेद भाव पर विचार करें

ग्रामीण मुद्दों को समझने के लिए, अपनी सीएसआर नीतियों को तैयार करते समय लड़कियों को शामिल करें।

हम कहते हैं कि आप लड़कियों को सार्थक रूप से उन सभी चीज़ों में शामिल करे जो आप करते हैं क्योंकि ऐसा करने से सफलता की संभावना बढ़ जाएगी यदि सिर्फ हम लड़कियों की राय और सलाह को सुनते हैं।

ये सुनिक्षित करना की लड़कियों को इन चर्चाओं में बराबरी का हिस्सा मिले।

“इस रिपोर्ट से मेरी सबसे बड़ी सीख / टेकअवे यह है कि भले ही हम सभी अलग-अलग शहरों में रहते हैं और हमारी स्थितियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन हमारे सामने जो चुनौतियाँ हैं, वे एक जैसी हैं और हमें उन्हें एक साथ मिलकर सामना करने की ज़रूरत है। लड़कियां आगे का रास्ता तैयार करके इस सफर को आसान बनाने के लिए साहसिक कदम उठा रही हैं। ये समय एक साथ काम करने का है क्योंकि असल परिवर्तन होने के लिए, दुनिया को सिर्फ शब्दों से ज़ायदा की ज़रूरत है। ”
- **रूबी**
20, एम्पावर गर्ल्स एडवाइजरी काउंसिल।

कार्यकर्ताओं की बातों के कुछ अंश

“कोविड १९ के दौरान, लड़कियों द्वारा बताई गई, और सर्वे में दिखाई गई, कई चुनौतियों और असफलताओं पर जेंडर की स्टडी करने वाले विद्वानों ने कुछ अनुमान लगाया है। इसलिए, फील्ड स्टडी करके इस आवाज़ को और बढ़ाना अहम् है ... एक बात जो मुझे बहुत अच्छी लगी, वो ये, कि बहुत सारी लड़कियां पॉजिटिव थीं और अपने भविष्य को लेकर उनकी उम्मीदें जिंदा थीं। ये उम्मीदें तभी साकार हो सकती हैं, जब लड़कियों और उनके सलाह-मशवरे को सुना जाए।"

-डॉ. रविंदर कौर
समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान की प्रोफेसर
इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली

"लड़कियों के अनुभवों का समर्थन करने के लिए, इन आँकड़ों का होना ज़रूरी है। लड़कियों के लिए ज़्यादा और बेहतर संसाधनों की वकालत करने में इनका इस्तेमाल किया जा सकता है ... हम अक्सर किसी लड़की के जीवन का बस वही एक पहलू देखते हैं जो हमें लगता है सबसे ज़रूरी है: जैसे कि उसकी पढ़ाई, या उसका शरीर, या उसका आर्थिक कल्याण, आदि। लेकिन ये डेटा हमें उनका हर पहलू दिखाता है। सिर्फ वही नहीं, बल्कि उनके अनुभव की पूरी तस्वीर दिखाता है। साथ ही, जिस तरह से डेटा लिखा गया है, वो लड़कियों को होने वाले अनुभवों की विविधता भी दिखाता है। बताता है, कि सारी लड़कियां एक ही मिट्टी की नहीं बनी होती हैं। अलग-अलग तत्व के आधार पर, लड़कियां अलग-अलग तरीकों से प्रभावित होती हैं। इसका हिसाब रखना ज़रूरी है।"

-जोडी माईरम
जेंडर जस्टिस कंसल्टेंट

“हमारे देश में लड़कियों और युवा औरतों के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वो ये, कि उनके पास आवाज तो है, लेकिन उनको सुना नहीं जा रहा है। ऐसे में ये 'खुद की आवाज़' वाला रिसर्च स्टडी, मायने रखता है । खासकर ये जानते हुए कि इसे लड़कियों के लिए, लड़कियों के साथ ही विकसित किया गया है। इस ग्लोबल महामारी की स्थिति में, पूरे इंडिया में युवा लड़कियों की शिक्षा, आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य, और सामाजिक कल्याण पर गंभीर असर पड़ा है ... ऐसी स्थिति में, कम से कम हम युवा लड़कियों को ये मौका तो दे ही सकते हैं कि वो अपनी चुनौतियों का हल खुद निकालें। ”

-नघमा मुल्ला
अध्यक्ष और सी.ओ.ओ, एडेलगिव फाउंडेशन

"ये एक बहुत ही ज़रूरी काम किया गया है। महामारी के दौरान, पहले से ही किनारे किये गए वर्ग पे इसका जो भारी प्रभाव पड़ा है, उसके बारे में बहुत मोटा माटी रिपोर्टिंग हुई है । ये रिसर्च इन प्रभावों की व्यापकता को बारीकी से देखेगा और उसकी बनावट समझेगा।

-रोसा ब्रांस्की
सह-संस्थापक और सह-सी.ई.ओ., पर्पसफुल

17 PARTNERSHIPS FOR THE GOALS

SDG 11 की निगाह से आगे देखना

भागीदारी/पार्टनरशिप

जो लोग पॉलिसी बनाते हैं, जो प्रोग्राम लीड करते हैं, मीडिया, और सारे लोग भी , लड़कियों को आगे नहीं रखते - न अपनी पॉलिसी और प्रोग्रामों में, न संसाधन बांटने में, न समाज के अपने कथन में । लड़कियों की आवाज़ उनके घर बार और उनके समुदायों में नहीं सुनी जाती, मंचों की तो बात ही छोड़िये । ये लड़कियों को अदृश्य करने जैसा है, और ये इस महामारी के पहले भी चालू था । हमारी रिसर्च हमें बताती है कि पिछले साल में ये हालात बद से बदतर हो गए हैं ।

अब जब हम कोविड- १९ के बाद के समय की सोच रहे हैं, हम सोच रहे हैं कि जो खो गया, उसका फिर से निर्माण कैसे किया जाये ? जिन समुदायों को साधन सही से मिलते नहीं, उनकी सहायता कैसे की जाए? ये समय हमारे लिए एक मौक़ा है । हमारा लक्ष्य ये नहीं होना चाहिए कि कविड के पहले के समय में कैसे लौटा जाए । क्यूंकि भारत और दुनिया भर में ,कविड के पहले का वो समय, कई किशोर लड़कियों के लिए बहुत हानिकारक था । हमारे दिमागों को अब एक पलटी लेनी होगी । लड़कियों की बात सुनना काफी नहीं, हमें उनके बहुत ख़ास और गहरी सोच को इस्तेमाल में लाना होगा । महामारी और उसके बाद के लॉकडाउन ने कई लोगों के लिए बहुत भारी दिक्कतें खड़ी कीं । पर ये, नए सिरे से निर्माण करने का अवसर भी है । इस अवसर को ठीक से समझ कर, हम लड़कियों, उनके परिवारों और समुदायों के लिए और बेहतर सन्दर्भ बना सकते हैं ।

ये रिसर्च हमें दिखाता है कि लड़कियों की बात सुनने से बहुत कुछ मिलता है । लेकिन जब तक हम उनके सुझावों को अमल नहीं करेंगे, उनके ज़रिये बदलाव नहीं लाएंगे, तब तक उनकी ज़िंदगी नहीं बदलेगी । हमें उनकी जानकारी और उनके तजुर्बे को और जगह, और ऊंचा दर्ज़ा देना होगा । अगर कोई प्रोग्राम का उनकी ज़िंदगी पे असर होने वाला है, तो उनको उस प्रोग्राम को बनाने में शामिल करना होगा । फंडिंग करने वाले, कार्यकर्ता, पालिसी बनाने वाले और ज्ञानी अकादमिक, सबको उनके सुझावों पे काम करना होगा और संसाधनों को ऐसे बांटना होगा कि लड़कियों को इनसे सहारा मिले । अक्सर हम जिसे 'नार्मल' समझते हैं, वो बस कुछ ही लोगों के लिए नार्मल होता है । हम जब लड़कियों की सुनेंगे, तभी हम एक ऐसे 'नार्मल' का निर्माण कर पाएंगे जहां व्यवस्था में बसी हुई जेंडर के आधार पर विषमताएं, कम होती जाएंगी ।

अगर हम सब चाहते हैं कि काम का असर लंबे समय के लिए रहे, तो ऐसे में पार्टनरशिप ज़रूरी है। इसलिए हम आपको आमंत्रित करते हैं कि आप:

१. इस जानकारी का उपयोग करें

ये रिपोर्ट और इसके परिणाम, सब कुछ सार्वजनिक डोमेन पर उपलब्ध हैं। इन कामों से संबंधित हितधारकों/स्टेकहोल्डर्स को लड़कियों के सुझावों पर गौर कर, उनको अपने काम में इस्तेमाल करना होगा । इस तरह ये बातें इन कामों की मुख्यधारा का हिस्सा बनेंगीं ।

२. लड़कियों द्वारा लिए गए फैसलों का समर्थन कीजिये और उनकी फंडिंग भी

एस.डी.जी. इंडिया इंडेक्स २०१९ ने भारत के एस.डी.जी. के सम्बन्ध में किये गए वादों को ट्रैक किया, कि ये कहाँ तक निभाए गए । उसके आधार पर एक रिपोर्ट तैयार की गयी। उसमें जेंडर समानता को लेके, इंडिया की पोजीशन 'आकांक्षात्मक ' बतायी गयी ।यानी आकांक्षा है, पर अभी मकाम से बहुत दूर हैं । अगर मेनस्ट्रीम जेंडर के काम पे सोच समझ कर, और इन्वेस्टमेंट नहीं किया गया, तो भारत की औरतों और लड़कियों के लिए कुछ भी नहीं बदल पायेगा ।इसलिए एक्शन लेने की ज़रूरत है । संसाधन प्रोग्रामिंग की दिशा में एक्शन । जिसमें लड़कियों को उनकी खुद की जिंदगी में नायिका के रूप में, प्रोग्राम की नींव समझा जाए। और सामाजिक विकास को लेके जो भी लक्ष्य हों, उनमें भी हर बार जेंडर को ध्यान में रखा जाए।

३. एक तरह की विचारधारा रखने वाले पार्टनर्स का गठबंधन बनाएं

अगर हम साथ हों तो, तो हम और प्रभावशाली होंगे । अगर हम अपने प्रोग्राम और प्रक्रियाओं में लड़कियों की आवाज़ को बढावा दें, तो ये बात तो पक्की है कि उनकी ज़रूरतें, पहले से बेहतर पूरी की जाएंगी। हमें साथ मिलकर लड़कियों के दृष्टिकोण को अपने काम में निहित करना चाहिए। एक कॉमन समुदाय बनाना चाहिए जो लड़कियों की आवाज़ को मुख्यधारा तक पहुंचाए। और इसके लिए संसाधनों की भी व्यवस्था करनी चाहिए, जिसमें प्राइवेट सेक्टर के चैनल भी शामिल हों। इस रिपोर्ट में लड़कियों ने जिन क्षेत्रों पर ज़ोर डाला है, हमें वहां, सोच-समझकर, सबसे ज़्यादा इन्वेस्टमेंट करना चाहिए। साथ मिलके, हम उनके विचारों और समाधानों को आगे लेकर जा सकते हैं और जेंडर समानता हासिल करने की तरफ एक बेहतर कदम बढ़ा सकते हैं।